सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
**मासिक सच्चा राही**
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

**सहयोग राशि**

| | |
|---|---|
| एक प्रति | ₹ 12/- |
| वार्षिक | ₹ 120/- |
| विशेष वार्षिक | ₹ 500/- |
| विदेशों में (वार्षिक) | 30 यु.एस डालर |

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें
**"सच्चा राही"**
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
# सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अप्रैल, 2011 वर्ष 10 अंक 02

## रब की रज़ा

(हदीस)

हुब्बे ख़ुदा रसूल बिन
मुम्किन नहीं नजात
गर चाहते नजात हो
मानो सारी यह बात
हुब्ब की पहचान है
हुक्मों की पैरवी
अहकाम पर वही हों
लाए हैं जो नबी
दाँतों से लो तुम पकड़
अहकाम जो तुम को मिले
आख़िरत में ता तुम्हें
रब की रज़ा जन्नत मिले

**इदारा**

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

# विषय एक दृष्टि में


| | | |
|---|---|---|
| कुर्आन की शिक्षा | मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी | 3 |
| प्यारे नबी की प्यारी बातें | अमतुल्लाह तस्नीम | 4 |
| जज़्ब–ए–दीनदारी और सहीह दीन | सम्पादकीय | 6 |
| जगनायक | हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी | 8 |
| इस्लाम दुश्मनी के मुकाबले के लिए | मौलाना सै0 मुहम्मद वाजेह रशीद नदवी | 11 |
| इलहाद व बेदीनी और हमारा फर्ज़ | मौलाना हमज़ा हसनी नदवी | 15 |
| कुर्आन की सेवा सबसे उत्तम सेवा | हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी | 16 |
| आपके प्रश्नों के उत्तर | मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी | 18 |
| नेकी कर दरिया में डाल | ए0 जे0 खान | 22 |
| स्वयं को पहचानिये अन्यथा | मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी | 23 |
| पहले अपनी ख़बर लीजिए | मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी | 27 |
| कादियानियत के गढ़ में इस्लाम पसंदों की यलगार | | 30 |
| मानवता का संदेश | इदारा | 32 |
| एक नज़र ईसाईयों के खूनी इतिहास पर | मौ0 सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान | 36 |
| अंतर्राष्ट्रीय समाचार | डॉ0 मुईद अशरफ नदवी | 40 |

# क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

## सूर–ए–बक़रह

**अनुवाद** : और डरो उस दिन से कि काम न आये कोई शख़्स किसी के कुछ भी और क़ुबूल न हो उसकी तरफ़ से सिफ़ारिश, और न लिया जाये उसकी तरफ़ से बदला, और न उनको मदद पहुँचे[1(48)], और याद करो उस उक़्त को जब कि रिहाई दी हमने तुमको फ़िरऔन के लोगों से, जो करते थे तुम पर बड़ा अज़ाब, ज़बह करते थे तुम्हारे बेटों को और ज़िन्दा छोड़ते थे तुम्हारी औरतों को[2], और इसमें इम्तिहान था तुम्हरे रब की तरफ से बड़ा[3(49)], और जब फाड़ दिया हमने तुम्हारी वजह से दरिया को, फिर बचा लिया हमने तुम को और डुबो दिया फ़िरऔन के लोगों को, और तुम देख रहे थे[4(50)], और जब हमने वादा किया मूसा से चालीस रात का, फिर तुमने बना लिया बछड़ा मूसा के बाद, और तुम ज़ालिम थे[5(51)], फिर मुआफ़ किया हमने तुमको इस पर भी ताकि तुम एहसान मानो[6(52)], और जब हमने दी मूसा को किताब और हक़ को नाहक़ से जुदा करने वाले अहकाम, ताकि तुम सीधी राह पाओ[7(53)]।

## तफ़्सीर

**1**. जब कोई किसी मुसीबत में मुब्तला हो जाता है तो उसके साथ अक्सर यही किया करते हैं कि पहले तो उसके ज़िम्मे जो हक़ होता है उसे अदा करने की कोशिश करते हैं। यह नहीं हो सकता तो किसी ज़ोर व सिफ़ारिश से बचाने का उपाय करते हैं। यह भी न हो सके तो तावान (जुर्माना) दे कर छुड़ाते हैं। अगर यह भी नहीं हो सकता तो मजबूर हो कर अपने मददगारों को जमा करते हैं और मुसीबत से नजात दिलाने की कोशिश करते हैं। हक़–तआला ने इसी क्रमानुसार इरशाद फ़रमाया कि कोई शख़्स अल्लाह का कितना ही क़रीबी हो मगर किसी नाफ़रमान अल्लाह के दुश्मन काफ़िर को इन चारों सूरतों में से किसी सूरत से नफ़ा नहीं पहुँचा सकता, बनी इसराईल कहते थे कि हम कैसे ही गुनाह करें हम पर अज़ाब न होगा, हमारे बाप दादा जो पैगम्बर हैं हमें बख़्शवालेंगे, सो ख़ुदा–ए–तआला फ़रमाता है कि यह ख़्याल तुम्हारा ग़लत है।

**2**. फ़िरऔन ने ख़्वाब देखा, नजूमियों ने उसकी ताबीर दी कि बनी इसराईल में एक शख़्स पैदा होगा जो तेरे दीन और सल्तनत को ग़ारत कर देगा। फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि बनी इसराईल में जो बेटा पैदा हो उसको मार डालो और जो बेटी पैदा हो उसको ख़िदमत के लिये ज़िन्दा रहने दो, ख़ुदा–ए–तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को पैदा किया और ज़िन्दा रखा।

**3**. यहाँ "बलाउन" के कई माना हैं अगर "ज़ालिकुम" का इशारा ज़बह की तरफ़ लिया जाये तो उसके माना मुसीबत के होंगे, और अगर नजात की तरफ़ इशारा है तो "बलाउन" के माना नेअ़मत के होंगे, और मजमूए (समूह) की तरफ़ हो तो इम्तिहान का माना लिये जायेंगे।

**4**. यानी याद करो ऐ बनी इसराईल, उस बड़ी नेअमत को कि जब तुम्हारे बाप दादा फ़िरऔन के डर से भागे और आगे दरिया और पीछे फ़िरऔन का लश्कर था और हमने तुमको बचा लिया, और उसके लश्कर को गर्क़ कर दिया।

**5**. और यह क़िस्सा और एहसान भी याद करने के क़ाबिल

**शेष पृष्ठ.....5 पर**

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अनुः नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

## सलाम में पहल की फ़ज़ीलत

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अबूउमामा रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया वह अल्लाह से ज़ियादा क़रीब है जो सलाम में पहल करता है। (अबूदाऊद)

### मुर्दों का सलाम

हज़रत जुहैमी रज़ि0 से रिवायत है कि मैं हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा "अलैकस्सलामु या रसूलल्लाह" आपने फरमाया "अलैकस्सलामु" न कहा करो। अलैकस्लामु मुर्दों का सलाम है। (अबूदाऊद)

### सलाम के रसूल

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि सवार पैदल को सलाम करे और पैदल, बैठने वालों को सलाम करे और थोड़े बहुत को सलाम करें।

(बुखारी—मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि छोटा, बड़े को सलाम करे।

हज़रत अबूउमामा सद्दी बिन अज्लान रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि अल्लाह से ज़ियादा क़रीब वह आदमी है जो सलाम में पहल करता है। (अबूदाऊद)

हज़रत अबूउमामा रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से पूछा गया कि आदमी एक दूसरे से मिले तो पहले कौन सलाम करे? आप (सल्ल0) ने कहा, जो उन दोनों में अल्लाह के नज़दीक ज़ियादा बेहतर हो।

(तिर्मिज़ी)

### बार-बार सलाम करना

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 से उस आदमी के बारे में रिवायत है जो नमाज़ बुरी तरह पढ़ता था, वह आया और नमाज़ पढ़ी फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की खिदमत में हाज़िर हुआ और सलाम किया। आप (सल्ल0) ने सलाम का जवाब देकर कहा कि जाओ फिर नमाज़ पढ़ो, तुम ने नमाज़ नहीं पढ़ी, वह पलट गया, नमाज़ पढ़ कर आया और सलाम किया। आप (सल्ल0) ने सलाम का जवाब देकर कहा कि जाओ नमाज़ पढ़ो, तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। तीन बार ऐसा ही हुआ।[1]

1. फिर आप सल्ल0 ने उसको नमाज़ पढने का ढंग बताया और ठहर—ठहर कर नमाज़ पढ़ने की नसीहत की।

### जुदा होने के बाद फिर सलाम

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि जो आदमी अपने भाई से मिले तो उसको सलाम करे और अगर पेड़ या दीवार या पत्थर बाधक (हाएल) हो फिर उससे मिले तो उसको सलाम करे। (अबूदाऊद)

### घर में दाखिल होते वक़्त सलाम का बरकत

### क़ुर्आन

जब, घरों में जाने लगो तो अपने लोगों को सलाम करो, ये भलाई की दुआ अल्लाह की तरफ से बरकत वाली और उम्दा है।

(सूरः नूर 8)

### हदीस

### अपने घर में जाते वक्त सलाम

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि मुझसे हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि ऐ मेरे बेटे! जब तुम अपने घर जाया करो तो घर वालों को सलाम किया करो, तो तुम पर और तुम्हारे घर वालों पर बरकत होगी।

(तिर्मिज़ी)

### बच्चों को सलाम

हज़रत अनस रज़ि0 एक बार बच्चों के पास से गुज़रे तो उनको सलाम किया और कहा, हुज़ूर सल्ल0 भी इसी तरह करते थे।

(बुखारी–मुस्लिम)

### बूढ़ी औरत को सलाम

हज़रत सहल बिन साद रज़ि0 से रिवायत है कि एक औरत थी या हमारे यहाँ एक बुढ़िया थी, वह चुकन्दर की जड़ें और जौ पीसती, जब हम लोग जुमा की नमाज़ पढ़कर आते थे और उसको सलाम करते थे तो वह हमारे सामने उसको रख देती थी। (बुखारी)

### ऐसे मौके पर औरतों को सलाम करना जहाँ कोई शक न हो

हज़रत उम्मे हानी फाख्ता बिन्ते अबूतालिब से रिवायत है कि मैं मक्का विजय के दिन हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के पास आई आप (सल्ल0) नहा रहे थे और हज़रत फातिमा रज़ि0 पर्दा (आड़) किये हुए थीं। मैंने सलाम किया। फिर पूरी हदीस बयान की। (मुस्लिम)

हज़रत अस्मा रज़ि0 बिन्ते यज़ीद से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 हम कई औरतों के पास से गुज़रे तो हमको सलाम किया। (अबूदाऊद)

तिर्मिजी की एक रिवायत में है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 एक बार मस्जिद में से गुज़रे तो कुछ महिलाएं बैठी हुई थीं तो आप (सल्ल0) ने हाथ के इशारे से सलाम किया।

### ग़ैर मुस्लिमों से सलाम की शुरूआत न की जाए

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि यहूदी और ईसाईयों से सलाम की शुरुआत न करो और जब तुम्हें रास्ते में मिलें तो उनको किनारे चलने पर मजबूर करो। (मुस्लिम)

### ग़ैर मुस्लिमों के बीच सलाम का तरीक़ा

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया जब तुम्हें "अहलेकिताब (ईसाई–यहूदी) सलाम करें तो तुम जवाब में सिर्फ "वअ़लैकुम"[1] कहो।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत उसामा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ऐसी मज्लिस के पास से गुज़रे जहाँ मुसलमान, मूर्ति पूजक, यहूदी और हर तरह के लोग मौजूद थे, आप (सल्ल0) ने उनको सलाम किया।

(बुखारी–मुस्लिम)

---

1. इस्लामी विद्वान (उलमा) ने लिखा है कि काफिर के सलाम के जवाब में "हदाकल्लाह" कहना चाहिये और कुछ उलमा ने कहा है कि जरूरत के वक़्त सलाम कहना भी जायज़ है और मुसलमान काफिर को खत लिखे तो जायज़ है जैसे हुज़ूर सल्ल0 ने हिरक्ल को लिखा था " सलामुन अला मनित्तबअल् हुदा"।

### कुर्आन की शिक्षा.....

है कि हमने "तौरैत" अता करने का वादा मूसा से चालीस दिन–रात का किया और उनको तूर पर तशरीफ़ ले जाने के बाद बनी इसराईल ने बछड़े की पूजा शुरु कर दी और तुम बड़े बे इन्साफ़ हो कि बछड़े को ख़ुदा बना लिया।

**6.** मतलब यह है कि बावजूद इस शिर्के जली (खुले शिर्क) के हमने तुम से दर गुजर फ़रमाई (क्षमा कर दिया) और तुम्हारी तौबा मन्जूर की और तुमको फ़ौरन हलाक नहीं किया, तुम हमारा शुक्र अदा करो और एहसान मानो।

**7.** किताब तो "तौरैत" है और "फ़ुरक़ान" फ़रमाया उन शरई अहकाम को, जिनसे जाएज़ ना जाएज़ मालूम हो, या "फ़ुरक़ान" कहा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के "मोजिज़ों" को, जिससे झूठे–सच्चे और काफ़िर व मोमिन की तमीज़ (अन्तर) हो या तौरैत ही को कहा कि वह किताब भी है, और उससे हक़ व नाहक़ भी जुदा होता है।

❑❑

**अनुरोध**

**पाठक गण लेखक जनों से अनुरोध करते हैं कि वे सच्चा राही को और सरल करें।**

**धन्यवाद**

# जज़्ब-ए-दीनदारी और सहीह दीन

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

**1.** क़ाबिले मुबारकबाद हैं वह भाई जो दीनदारी का जज़्बा रखते हैं। नमाज़ पढ़ते हैं, रमजान के रोज़े रखते हैं, माल पर सालाना ज़कात निकालते हैं और माल होने और हज की इस्तिताअ़त रखने पर हज करते हैं और बाज़ मालदारों को तो अल्लाह तआला कइ—कई हज की तौफीक़ से नवाज़ता है। बहुत से माल वालों से अल्लाह तआला और भी दीनी काम ले लेता है, कोई मस्जिद बनवा कर आखिरत में अपना घर तैयार कर लेता है, कोई मदरसों की मदद कर के अपने लिये सदक—ए—जारिया का नज़्म कर लेता है तो कोई अपने वफात पाए हुए अजीजों को सवाब पहुँचाने के लिए मुख़्तलिफ आमाले खैर करता है। अल्लाह तआला उनके इन आमाले ख़ैर को अकारत न करेगा वह अपने करम से उनके आमाल को कबूल करेगा, और उनको अच्छा बदला देगा।

**2.** कुछ भाई अपने दीनदारी के जज़्बे के तहत धूम धाम से मीलाद करते हैं, ग्यारहवीं में खाना तक्सीम करते हैं, मुहर्रम में हज़रते हुसैन रज़ि0 को सवाब पहुँचाने के लिये लोगों को शरबत पिलाते हैं, खाना खिलाते हैं, खिचड़ा तक्सीम करते हैं, रजब में इमाम जाफर सादिक को सवाब पहुँचाने के लिए कूंडे की रस्म अदा करते हैं, शाबान की पन्द्रहवीं को तरह—तरह के हल्वे बनाते और हज़रत उवैस क़रनी को फातिहा देते हैं, वफात पाये हुए बुज़ुर्गों का उर्स करते हैं, अपने अजीजों के इन्तिक़ाल पर तीजा, चालीस्वां और बरसी करके उनको सवाब पहुँचाते हैं वगैरह।

तहक़ीक से मालूम होता है कि यह नम्बर 2 वाले काम किये तो जाते हैं दीनी जज़्बे से लेकिन दीन लाने वाले हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की तालीमात में यह सब नहीं मिलता। सहाब—ए—किराम का अमल भी इन को साबित नहीं करता। इजतिहाद करने वाले मशहूर इमामों में हजरत इमाम अबू हनीफा, हजरत इमाम मालिक, हज़रत इमाम शाफई और हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल (अल्लाह इन सब पर रहम करे) के यहां भी इन आमाल का पता नहीं मिलता। मगर जो दीनदारों ने यह आमाल अदा किये क्या यह अकारत जाएंगे और इन पर उनसे मुहासबा होगा और उनकी पकड़ होगी ? मैं समझता हूँ कि अगर वह अरबी नहीं जानते थे कुर्आन व हदीस को खुद नहीं समझते थे और इन आमाल को गुजरे हुए दीनदारों से बतौर दीन लिया और उन पर जमे रहे तो अल्लाह तआला अपने करम से जरूर अज्र अता फरमाएगा। रही यह बात कि कुछ दीनदार आलिमों ने उन को आगाह किया कि यह सब बातें अल्लाह के नबी ने नहीं सिखाईं बल्कि नबी सल्ल0 ने दीन में नई बात निकालने को गुनाह बताया है, मगर उन सादा लौह दीनी जज़्बा रखने वालों को कुछ उलमा ने यह पढ़ा दिया कि हां यह सहीह है कि इन आमाल को हुजूर सल्ल0 ने नहीं सिखाया लेकिन यह बिदअते हसना (अच्छी नई बातें) हैं, इन्हें करते रहो, अब यह आम दीनदार कुल्लु बिदअतिन ज़लालतुन की हक़ीकत को न समझ सके और इन बिदआत को करते रहे, ऐसी सूरत में भी मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला ऐसे दीनदारों को इन बिदआत

पर पकड़ न फरमाएंगे। हाँ जिस की समझ में बिदआत की बुराई आ गई मगर वह हठ धर्मी से उस पर जमा रहा, उससे जरूर मुआख़जा होगा और उस की पकड़ होगी।

इसी तरह के दीन से ना वाकिफ और दीनी जज़्बा रखने वाले बाज ऐसे काम करते रहते हैं जिन को वह दीनी समझते हैं मगर वह शिर्किया होते हैं– जैसे ताजिये से औलाद मांगना, किसी बुजुर्ग से यह कहना कि हमारा मर्ज दूर कर दीजिये, हमारा मुकदमा जिता दीजिये, हम को औलाद दीजिये वगैरह, इन आमाल की तौबा तो इस दुनिया में हो सकती है मगर वे तौबा वफात पा जाने पर बख्शिश की उम्मीद नहीं की जा सकती, अल्लाह तआला शिर्क व कुफ्र से हम सब को महफूज रखे। यहाँ पर ये बात याद रहे कि किसी जिन्दा बुजुर्ग से दुआ कराना दुरूस्त है, इसी तरह किसी वफात पाए हुए बुजुर्ग से यूँ कहना कि दुआ कर दीजिये कि मेरा फुलां काम (जब कि वह काम जाइज़ हो) हो जाए शिर्क नहीं होगा लेकिन इसमें एक इख़्तिलाफी बात यह आती है कि वफात पाये हुये बुजुर्ग हमारी सुन भी रहे हैं या नहीं? लिहाज़ा उनसे इस तरह की दरख़्वास्त करना ठीक नहीं।

काबिले मुबारकबाद हैं वह लोग जो दीन का सहीह इल्म भी रखते हैं और सहीह दीन पर अमल भी करते हैं वह भी काबिले मुबारकबाद हैं जो सहीह दीन कल्मा, नमाज़, रोज़ा, जकात और हज पर आमिल हैं, लेकिन अपनी लाइल्मी के सबब कुछ बिदआत में मुब्तला हैं, अल्लाह तआला से उम्मीद है कि वह अपने करम से ऐसों से भी अच्छा मुआमला फरमाएगा।

लेकिन कितने घाटे में हैं वह लोग जो बिदआत की बुराई जानते हुए अपनी हठ धर्मी से उसे छोड़ने पर तैयार नहीं हैं। हमारी नव जवानी के जमाने में हमारे इलाके के न्योरा गाँव में एक चौधरी इम्तियाज़ अली खाँ ताजिया दार थे, जब उनको मालूम हुआ कि ताजिया दारी नाजाइज़ है उन्होंने किसी के कुछ कहने सुनने की परवाह किये बिना ताजिया दारी छोड़ दी, अल्लाह उनकी मगफिरत फरमाए और उनके दरजात बुलन्द करे।

कहाँ ठिकाना होगा उन लोगों का, जो मुसलमान घर पैदा हुए आज भी कागज़ात में उन का धर्म इस्लाम लिखा जाता है लेकिन कुछ तो उनमें ऐसे हैं जो कल्मे से भी अन्जान है, न नमाज़ से मतलब न रोज़े से न जकात और हज से, हाँ निकाह व तलाक को मानते हैं जबीहा खाते हैं, मरने पर कोई नमाज़े जनाजा पढ़ देता है और दफन कर दिये जाते हैं, लेकिन ज़िन्दगी भर रिश्वत, सूद, गसब (किसी का माल ना हक ले लेना) से कभी परहेज न किया, हम उन पर शिर्क व कुफ्र का हुक्म लगाने से कांपते हैं कि उनकी तादाद हमारे हिन्दुस्तान में बहुत जियादा है। मगर यह नहीं समझ पाते कि वह नमाज़, रोज़ा छोड़ने के गुनाह से या हराम खाने के गुनाह से कैसे छुटकारा पाएंगे? सारे दीनदारों की ज़िम्मेदारी है कि वह ऐसे भाईयों को अल्लाह व रसूल और दीने इस्लाम से जोड़ने की कोशिश में कोताही न करें वरना इनसे भी इसका मुआखज़ा हो सकता है। अल्लाह तआला हम को सहीह दीन पर चलाए और अपने भाइयों को दीन से जोड़े रखने की कोशिश की तौफीक़ से नवाजे और अपने मुल्की भाईयों तक सहीह इस्लाम का तआरुफ पेश करने की भी तौफीक़ दे।

आमीन!

# जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0: मुहम्मद गुफरान नदवी

**सूरः मुददस्सिर का नुजूल—**

रसूलुल्लाह सल्ल0 पर "वही" के आने में एक वक़्फ़ा (विराम) हुआ जिसमें "वही" नहीं आई जिससे आपको इन्तिज़ार सा रहा फिर "वही" आना ज़ारी ही गया, आप सल्ल0 उसको इस तरह बयान फ़रमाते हैं कि मै इस हाल में था क़ि चल रहा था कि मैंने आसमान की तरफ से आवाज़ सुनी, मैंने अपनी निगाह उठाई तो यह नज़र आया कि वही फ़रिश्ता जो मुझे ग़ारे हिरा में नज़र आया था एक कुर्सी पर ज़मीन व आसमान के बीच मौजूद है, मैं यह देख कर वहशत में आ गया और मैंने कहा मुझे उढ़ाओ, इसी हाल में अल्लाह तआला की तरफ़ से यह "वही" नाज़िल हुईः

"ऐ कम्बल ओढ़ने वाले! खड़ा हो जा, और आगाह कर दे, और अपने रब की बड़ाईयाँ बयान कर, अपने कपड़ों को पाक कर, नापाकी को छोड़ दे, और एहसान करके ज़ियादा लेने की ख़्वाहिश न कर, और अपने रब की राह में सब्र कर, बस जब सूर में फूँक मारी जाएगी तो वह दिन बड़ा सख़्त दिन होगा, जो काफ़िरों पर आसान न होगा।"

(अल—मुददस्सिर :1—10)

इस तरह आपको तवज्जुह दिलाई गई कि इस ज़िन्मेदारी के बोझ से इतना न घबराओ, उठो, अपनी ज़िम्मेदारी की अन्जाम देही शुरु करो, अपने रब की बड़ाई बयान करो और गन्दे अमल से दूर रहो, देखो जब क़ियामत का सूर फूँका जाएगा तो यह दिन बड़ा सख़्त मुश्किल का दिन होगा, हक़ से मुँह फेरने वालों के लिये आसान न होगा, इस तरह नबूवत रिसालत का बड़ा बोझ डाला गया जो इस वुसअ़त (विस्तार) के लिहाज़ से दूसरे नबियों पर नहीं डाला गया था, इस "वही" का सिलसिला क़ायम हो गया और "वही" मुसलसल आने लगी।

इस प्रकार अल्लाह तआला की ओर से आपको नबूवत का महान स्थान प्रदान हुआ, और इन्सानों की हिदायत का वह काम सुपुर्द हुआ जो पहले के नबियों के काम से ज़ियादा वसी और जामे (विस्तृत और व्यापी) काम था और इसी के साथ आपको नबियों के सिलसिले का ख़ात्मा (अन्तिम नबी) बनाया गया और क़ियामत तक दीने हक़ पर चलने और चलाने का रास्ता आपके बताए हुए मार्ग दर्शक सिद्धान्तों के अनुसार तय कर दिया गया, और वादा फ़रमाया गया कि आपकी कोशिशों को कामयाबी मिलेगी और दुनिया आपकी उम्मत के सामने नतमस्तक हो जाएगी लेकिन उससे पहले कठिन और दुर्गम रास्ते के हालात से गुज़रना होगा, और पथरीली ज़मीन से दअ़वते हक़ का काम करना होगा और सब्र और मज़बूती के साथ हालात को झेलना होगा, और जब तक अल्लाह तआला की इजाज़त नहीं आ जाती सिर्फ़ सब्र व बर्दाश्त से काम लेना होगा।

यह पैग़ाम चुँकि ख़ुदा की तरफ़ से "वही" की सूरत में और फ़रिश्ते के ज़रिए आया जो कि अल्लाह की नूरानी और आसमानी मख़लूक़ है, और पैग़ाम भी रब्बुलआलमीन का था। आप इन्सान थे, इन्सानी मख़लूक़ को पैग़ाम के वज़न से साबिक़ा पड़ा, आप का जिस्म उस वज़न से हिल गया, यह पैग़ाम विशेष पैग़ामे

इलाही था और "वही–ए–इलाही" इतनी बुलन्द और आसमानी स्तर की है कि इन्सान पर बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) उतरे तो वह उसको बर्दाश्त नहीं कर सकता। जल जाए या कुचल जाए, इसीलिये उसको फ़रिश्ता लाता और उसके वास्ते से नबी पर उतरती, फ़रिश्ते के वास्ते से आने पर भी उसका बोझ इतना होता था कि आप उसके बोझ से दब जाते और सख़्त दबाव झेलना पड़ता, अगर सवारी के जानवर के ऊपर होते तो सवारी पर भी बड़ा बोझ पड़ता, इसलिये आप अपनी ज़बान से "वही" को अदा करने के लिये अपने होंटों को ज़ोर से हरकत देते, इस पर यह हिदायत (आदेश) आई:

"अपनी ज़बान को ज़ियादा हरकत न दो कि जल्दी की वजह से ऐसा करने लगो, "वही" को एकत्र करना और उसका पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है"।

(सूरः क़ियामाः16–20)

चुनाँचि रसूलुल्लाह सल्ल0 के पास जब हज़रत जिबरईल आते तो उनके पढ़ने को आप ग़ौर से सुनते फिर वह आपको पूरी याद हो जाती, हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि मैंने एक मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्ल0 से दरयाफ़्त किया कि आपके पास "वही" कैसे आती है? आपने फ़रमायाः कभी तो घण्टी की आवाज़ की तरह आती है और वह मुझ पर बहुत सख़्त होती है, जब वह पूरी हो जाती है तो मुझे वह पूरी याद हो जाती है, और कभी फरिश्ता इन्सान की शक्ल में आता है और मुझसे बातें करता है और मैं सब समझ लेता हूँ जो वह कहता है, हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि मैंने आप को आप पर "वही" आते वक़्त देखा कि सख़्त सर्दी का मौसम है और "वही" के ख़त्म होने पर आपकी पेशानी पर पसीना नज़र आता[1]।

पहली "वही" के थोड़े वक़्फ़े (विराम) के बअ़द से वफ़ात तक 23 साला मुद्दत में आप पर "वही" आती रही, ज़रूरी और अन्य मामलों के सिलसिले में थोड़ी–थोड़ी आती, उसके अलफ़ाज़ भी कलामे इलाही होते जो कुर्आन मजीद में महफ़ूज (सुरक्षित) होते रहते, अल्लाह तआला की तरफ़ से वादा है कि वह क़ियामत तक अपनी सही शक्ल में महफ़ूज़ रहेंगे, उन्हीं से ईमान व नेक अमल वाली ज़िन्दगी का दस्तूरे असासी (मौलिक विधान) बना, इसी "वही" को "वही–ए–मतलू" कहते हैं अर्थात वही की वह क़िस्म जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के अल्फ़ाज़ (शब्दों) में हैं जिसकी तिलावत अर्थात उसको आँखों या ज़बान से पढ़ना इबादत है, इसके अलावा दूसरी क़िस्म की "वही" थी जो पैग़ामे इलाही की सूरत में फ़रिश्तों के ज़रिए आती थी, वह कलामे इलाही के अल्फ़ाज़ में नहीं होती थी, लिहाज़ा उसका बोझ और दबाव भी वह न होता था जो कुर्आन मजीद वाली "वही" का होता था, वह "वही" भी अल्लाह तआ़ला के हुक्म पर आधारित होती थी, और यह कुर्आन मजीद की "वही" की व्याख्या और ज़िन्दगी के अहम मामलात के सिलसिले में आदेशों पर आधारित होती थी, जो ख़ुद नबी सल्ल0 के कलाम या अमल की सूरत में ज़ाहिर होती थी, इस "वही" को भी हुक्मे इलाही की ही हैसियत हासिल थी, क्योंकि यह भी खुदा की तरफ से ही होती थी, खुद कुर्आन ने भी उसके "वही" होने की तस्दीक़ (पुष्टि) की, फरमायाः

"आप अपनी ख्वाहिश से नहीं कहते, यह वास्तव में "वही" है जो आपके पास भेजी जाती है"।

1. बुख़ारी, तबक़ात इब्न सअ़द भाग 1/197–198

**दअ़वते हक़ (सच्चाई की दअ़वत) का आरम्भ–**

हुज़ूर सल्ल0 ने नबूवत मिलने पर अपनी ज़िम्मेदारी अन्जाम देना शुरु फरमाया, दीन की सही हक़ीक़तों (वास्तविकताओं) से बाखबर करना शुरु किया, और उस पर अमल करने की ताक़ीद की, आप सल्ल0 ने फ़रमाया "ऐ लोगो! कहो कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (पूज्य) नहीं, कामयाब हो जाओगे" इसकी ज़द (मार) उन लोगों पर पड़ी जिन्होंने ख्याली ज़ेहन से पत्थर, लकड़ी और ग़ैर जानदार चीज़ों को ख़ुदा का दर्जा दिया था और उनकी इबादत किया करते थे, आप सल्ल0 ने कहा कि तुम ऐसी चीज़ों की इबादत क्यों करते हो जिनमें न बोलने की ताक़त है और न कुछ कर सकने की ताक़त, और तुम उनको एक अल्लाह के साथ शरीक करते हो, यह कैसी बेअक़्ली की बात है, आप सल्ल0 ने फ़रमाया (इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम) "मै तुम्हारे रब की तरफ़ से भेजा गया हूँ," कि तुम को उसका पैग़ाम पहुँचाऊँ, कि तुम उसकी इबादत करो जो तुम्हारा ख़ुदा है, और इधर उधर न फिरो, और मेरी बात मानो, कि मैं तुमको सही राहे अमल और अच्छे अख़लाक़ व किरदार की नसीहत करता हूँ, और जो कुछ मेरे परवरदिगार मुझ को बताते हैं मैं तुम को बताता हूँ[1]।

**हज़रत ख़ादीजह, अबू बक्र सिद्दीक़, अली और जैद बिन हारिस का क़ुबूले इस्लाम–**

हुज़ूर सल्ल0 के सामने अपने इस नए मनसब के लिये काम का मैदान पहले आपके हम वतन और ख़ानदान के लोग थे, फिर बाहर के लोगों की बारी थी, चुनाँचि आपने यह काम अपने घर से शुरु किया और आपको इसमें फ़ौरी (तत्कालीन) कामयाबी हासिल हुई, आपकी अहलिया साहिबा (पत्नी) हज़रत ख़दीजह बिन्त ख़ुवैलद और साथ रहने वाले चचा ज़ाद भाई हज़रत अली बिन अबी तालिब और आपके ग़ुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा और क़रीब तरीन दोस्त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ बिन अबी क़हाफ़ा आप पर ईमान लाए[2]। पहली "वही" आने के बाद से आपने "दअवत" का काम ख़ामोशी के साथ और सिर्फ़ तअल्लुक़ वालों से शुरु किया, जिनसे मान लेने की पूरी उम्मीद थी, इस तरह एक तादाद (संख्या) इस्लाम में दाखिल हुई, लेकिन यह तादाद थोड़ी थी। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने ईमान लाने के बाद अपने दोस्तों और क़रीब के लोगों को बात बताई और ईमान की रग़बत (रुचि) दिलाई, इस तरह हुज़ूर सल्ल0 की नबूवत और दअ़वत का इल्म हो जाने पर कुरैश के कई दूसरे लोग भी ईमान लाए, जिनमें ख़ास तौर पर उस्मान बिन हफ़्फ़ान, ज़ुबैर बिन अव्वाम, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, सअ़द बिन अबी वक़्क़ास, तलहा बिन उबैदुल्ला, अबू उबैदा बिन जर्राह, अरक़म बिन अरक़म, उस्मान बिन मज़ऊन, उबैदह बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब, सईद बिन ज़ैद, ख़ब्बाब बिन अरत, अब्दुल्ला बिन मसऊद, अम्मार बिन यासिर, सुहैब वग़ैरह हैं, अल्लाह तआला उन सबसे राज़ी हो[3]। इस तरह इस्लाम लाने वाले क्रमशः बढ़ते रहे, लेकिन शुरु के इस मरहले में खुल कर दअ़वत का काम नहीं किया जाता था

---

1. सीरते इब्नेहिशामः 1/262, तबक़ात इब्न सअ़दः 1/199, सीरते नबविया लेखक ज़हबी 1/81, सीरते हलबियाः 1/462

2. सीरते इब्नेहिशामः 1/140–150

3. सीरते इब्नेहिशामः 1/250

❑❑❑❑

(उर्दू हिन्दी लिपि में) **इस्लाम दुश्मनी के मुक़ाबले के लिए**

# इल्म और मुफाहमत का रास्ता इख़्तियार करने की जरूरत

—मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

यूरोप में इस्लाम, कुर्आने करीम, सरवरे आलम रहबरे इन्सानियत रसूले ख़ुदा मुहम्मद सल्ल0 की शान में की जाने वाली गुस्ताखाना कोशिशों और इहानत आमेज खाकों की इशाअ़त से अंदेशा था कि ग़ैर मुस्लिम हज़रात इस्लाम और इस्लामी तालीमात से मुतनफ्फिर हो जाएंगे और इस्लाम की इस मक़बूलियत में कमी आ जाएगी जो आलमे इस्लामी से मगरिबी सामराज के इनख़िला के बाद मशरिक़ व मग़रिब के बीच इकतिसादी और सियासी रवाबित और खुले जेहन से इस्लाम का मुताला करने वालों के एतिराफ और इस्लाम क़बूल करने से बन रही थी लेकिन अल्लाह के फज़्ल व करम से इस्लाम की मक़बूलियत में इजाफा हुआ और इस्लामी तालीमात और इस्लामी निजामे ज़िन्दगी के मुताले का रुझान बढ़ा है।

मग़रिब के मुआनिदाना रवैये की वजह से मग़रिब के तालीम याफ्ता और दानिश्वर तब्के में यह रुझान बढ़ा कि मग़रिब की इस्लाम दुश्मनी के अस्बाब का पता लगाया जाए, इस तरीके से मगरिब का दानिश्वर तब्का मगरिबी तमद्दुन के फरेब और दजल से वाकिफ हो रहा है, और मग़रिब का यह दावा कि इसकी तहजीब व तमद्दुद की बुन्याद रवादारी और हुकूके इन्सानी मसावात पर है, इस की हकीक़त खुल कर उनके सामने आ रही है, और वह इस्लाम की हकीक़त को तस्लीम कर रहे हैं। इस तरह खुद दुश्मन के घर में इस के खिलाफ आवाज़ें उठने लगी हैं।

बहुत से इस्लाम लाने वालों का साफ एतिराफ है कि वह इस्लामी मुआशरे की जिन्दगी से मुतअस्सिर हुए, उन्हें इस्लामी मुआशरे में बड़ा इतमिनान व सुकून मिला, और सआदत नसीब हुई और इस में बाहमी एतिमाद और इन्सानी जज़्बात का एहतिराम मिला और मुसलमानों की मुआशरत से वह तमाम शुकूक व शुबहात काफूर हो गये जो इस्लाम दुश्मन क़लमकारों और मगरिबी मीडिया की वजह से पैदा हो गये थे, जो इस्लाम और मुसलमानों की साफ व शफ़्फाफ शबीह को बिगाड़ कर पेश करता है।

इन इस्लाम लाने वालों में से बहुत से इस्लाम के पुरजोश दाअी बन गये और उन्होंने अपनी ज़िन्दगियाँ इस्लाम के दिफा के लिये वक्फ़ कर दीं, इन में सरे फेहरिस्त मुहम्मद असद, और मरयम जमीला हैं जिन्होंने मग़रिबी तहजीब व तमद्दुन के सियाह और घिनौने चेहरे को बेनक़ाब किया, यह काफिला बढ़ता रहा और मशहूर दानिश्वर, फनकार और सिफारत कार इसमें शामिल होते रहे, इन में रजा जारूदी, मोरीस बकाई, मुराद और यूसुफ इस्लाम वगैरह के नाम नुमाया हैं, इन दानिश्वरों का इस्लाम लाना रस्मी नहीं था बल्कि उन्होंने तवील तजुर्बा, मुशाहदा, इस्लामी निजामे ज़िन्दगी के गहरे और मुनसिफाना मुताले के बाद पूरे इतमिनान व यक़ीन के साथ इस्लाम को गले लगाया और फिर अपनी जिन्दगियाँ इस्लाम की ख़िदमत के लिये वक़्फ कर दीं।

फिक्री और तहजीबी यलग़ार के आगाज़ में सिर्फ मुसलमन ही इस्लाम का दिफा कर रहे थे। जिन को मगरिबी तहज़ीब व तमद्दुन के मुतअल्लिक़ मालूमात एकतरफा थीं, लेकिन बाद में यह महाज

उन लोगों ने संभाला जिन्होंने मगरिबी तमद्दुन और मगरिबी समाज को करीब से देखा, परखा और बरता है। मगरिबी ज़िन्दगी के सल्बी और ईजाबी दोनों पहलुओं का तजुर्बा किया और फिर हिकायत और तजरिबात की बुन्याद पर मगरिबी तहजीब की बुरी हालत देखी और तबाही को बयान किया तथा इस्लाम और इस्लामी तमद्दुन की बरतरी और बेहतरी को साबित किया। इस वजह से इन मुस्लिम कलमकारों की तहरीरों का बड़ा अच्छा असर पड़ा।

इस वक़्त दुन्या के तमाम खित्तों में दहशतगर्दी के नाम पर इस्लाम के खिलाफ चलाई जा रही आलमी मुहिम के बावजूद इस्लाम की मक्बूलियत रोज अफ्जू है, और खुद यूरोप में इस्लाम और मुसलमानों की तारीख़ के मुताले का रुझान तेजी से बढ़ रहा है, अखबारी रिपोर्टों से मालूम होता है कि इस्लाम और नबीये रहमत सरवरे कायनात मुहम्मद सल्ल0 के खिलाफ चलाई जाने वाली जारिहाना मुहिम कुबूले इस्लाम का सबब बन रही है। मिसाल के तौर पर डेनमार्क में इहानत आमेज कार्टूनों की इशाअत के बाद सीरते रसूल के मुताले का रूझान इतनी तेजी से बढ़ा कि सीरते नबवी से मुतअल्लिक मतलूबा जबान में लिट्रेचर खत्म हो गया और बहुत से ईसाईयों ने इस्लाम क़बूल कर लिया, इसी तरह हॉलैंड के इन्तिहा पसन्द मुतशद्दिद ईसाई वायलड्रेज़ गेरात की इशतिआल अंगेज फिल्म, फित्ना के रिलीज होने के बाद अनेक यूरोपियन बाशिन्दों ने इस्लाम कुबूल किया, स्वीजरलैण्ड में मस्जिदों के मीनारों पर पाबन्दी लगाने का मुतालबा करने वालों ने इस्लाम कुबूल कर लिया। न्यूयार्क सिटी में वर्ड ट्रेड सेन्टर के करीब जब मुसलमानों ने मस्जिद बनाने की कोशिश की और फिर इसमें रद्दे अमल के तौर पर पादरी टेरी जान्स ने कुर्आने करीम के नुस्खों के जलाने का एलान किया तो इस के रद्दे अमल में 180 अमरीकियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। बरतानिया की मुस्लिम आबादी में हालिया 6 सालों में आधे मिलयन का इजाफा हुआ है और इसके मुक़ाबिल बरतानिया में ईसाईयों की तादाद में दो मिलयन से ज्यादा कमी हुई है, और इस्लामी मुखालफत और नस्ल परस्ती के मुहिम के बावजूद एक हजार बरतानवी ख़वातीन ने इस्लाम कुबूल किया है और इस्लाम लाने के बाद इस्लामिक बरतरी और अफजलीयत को साबित कर रही हैं। इनमें सरे फेहरिस्त साबिक बरतानवी वजीरे आजम टोनी ब्लेयर की साली लूरैन बोथ, ब्राड फोड की वकील जान बेली (30 वर्ष) लन्दन चिल्ड्रेन स्कूल की मुअल्लिमा कॉथिरीन हेज़ लटाइन (31 वर्ष) लन्दन की मशहूर कवित्री सकीना दोग्लास (28 वर्ष) और टेली–विज़न प्रोग्रामर क्रिस्टेन बेकर हैं।

इन वाकिआत से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि जब भी इस्लाम और जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 की शान में गुस्ताखी की जाती है, और इस्लाम मुखालिफ कोई मुहिम चलाई जाती है तो कुबूले इस्लाम की लहर चल पड़ती है और इस्लाम के मुताले का रूझान तेज़ी से बढ़ने लगता है, शर, ख़ैर का सबब बन जाता है, इरशादे बारी तआला है कि अजब नहीं कि एक चीज़ तुम को बुरी लगे और वह तुम्हारे हक में भली हो, (अल बकरह–216)।

इस हौसिला अफज़ा सूरते हाल का सबब ईजाबी और मुसबत तरीक–ए–कार है। गुज़िश्ता अहद में मुसलमान इश्तिआल अंगेजी का जवाब इश्तिआल अंगेजी से देने लगते थे और सड़कों पर निकल आते थे जिस से मुखालिफ कैम्प में रद्दे अमल पैदा होता था और इस्लाम पर हमला करने वालों को अपने हल्के में हिमायती और समर्थक मिल जाते थे और वह

हीरो बन जाते थे और अपनी ज़लील हरकतों और गुस्ताखियों से ख़ूब दौलत कमाते थे लेकिन अब मुसलमानों के रवैये में तब्दीली आई है, इश्तिआल अंगेजी और एहतिजाज के बजाए इल्म व हिकमत पर मब्नी ईजाबी दिफाअ, पुरअम्न मुजाकिरात, बाहमी मुफाहमत और हिल्म व बरदाश्त का रास्ता इख्तियार किया जा रहा है, जिसके बड़े हिम्मतअफ्ज़ा नताइज बरआमद हो रहे हैं, अनेक मुस्लिम तंजीमों और क़ाइदीन ने मुखतलिफ मज़ाहिब के लोगों को जमा करके मुजाकिरात का जो तरीक़ा इख्तियार किया और इस्लाम के तआरुफ और दिफाअ के लिये लिट्रेचर फराहम किया इसके अच्छे असरात मुरत्तब हो रहे हैं। अभी हाल में वाशिंगटन में "असना" की जानिब से एक कॉन्फ्रेन्स मुनअकिद हुई, जिस में तमाम मजाहिब के मानने वाले मुसलमान, ईसाई, यहूदी, सिख और हिन्दू शरीक हुए, तमाम शुरका ने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस्लाम के खिलाफ चलाई जाने वाली मुहिम बन्द की जाए, क्योंकि मजहबे इस्लाम अम्न व आश्ती का मज़हब है, टकराव के बजाए मुफाहमत और डायलॉग का रास्ता इख्तियार किया जाए और सख्ती और इनफिरादी तशद्दुद की बुन्याद पर किसी मजहब को बदनाम न किया जाए, इस कॉन्फ्रेन्स से बहुत से गैर मुस्लिम दानिश्वरों का जेहन साफ हुआ, खुद हिन्दुस्तान में पयामे इन्सानियत के जल्सों और डायलॉग से गैर मुस्लिमों के ज़ेहनों में जो गलत फहमियां थीं वह दूर हो रही हैं।

इस कोशिश के नतीजे में खुद यूरोप और अमेरीका में इस्लाम और जनाब रसूलुल्लाह सल्ल0 पर होने वाले जारिहाना हमलों की संजीदा और दानिश्वर हल्के की तरफ से मज़म्मत होने लगी है क्योंकि यह जारिहाना इक्दामात मशरिकी तहज़ीब की कद्रों के खिलाफ है, जिसकी बुन्याद रवादारी, बाहमी एहतिराम, आजादी–ए–राय और पुरअम्न बक़ाए बाहम पर है। इस लिये अब खुद यूरोप में ऐसे अफ़राद पाये जाते हैं जो खुल कर इस्लाम मुखालिफ मुहिम की मजम्मत कर रहे हैं।

पादरी टेरीजॉन के एलान के बाद अमरीकी सद्र बराक हुसैन ओबामा ने कहा कि "इस तरह के जारिहाना इक्दाम से इन्तिहा पसन्दों की तादाद में इजाफा होगा और तशद्दुद को फरोग़ मिलेगा, लिहाज़ा हमें तमाम मजाहिब का एहतिराम करना चाहिये और जो लोग नफरत और दुशमनी को हवा दे रहे हैं उनकी मजम्मत की जानी चाहिए। बाज़ यूरोपियन मुल्कों में इस्लाम के तआरुफ के लिये निजामे तालीम में गुंजाईश पैदा की गई है और उनके रेडियो स्टेशनों से इस्लाम के तआरुफ के लिए वक़्त मुकर्रर किया गया है।

मज़ाहिब के एहतिराम की बात करने वाले तन्हा ओबामा ही नही हैं बल्कि जो भी खुले जेहन से इस्लाम मुखालिफ मुहिम और उसके नताइज का इन्साफ के साथ मुताला करता है वह एहतिरामे मज़ाहिब की बात करता है, लिहाजा बहुत से दानिश्वर और सियासी काइदीन ने "इस्लामी फोबिया" (इस्लाम से खौफ व दहशत की मुहिम) की मजम्मत की है और लोगों से खौफ व दहशत पैदा करने वाली कारवाईयों के रोकने की अपील की है, क्यों कि उनका कहना है कि इस से इस्लाम की मकबूलियत में और इज़ाफा होता है, इस लिये कि इस से गैर मुस्लिमों में इस्लाम और सीरते रसूल को जानने और क़ुर्आने करीम के मुताले का जज़्बा पैदा होता है तो दूसरी तरफ खुद मुसलमानों में गैरत व हमीयत और अपने दीन से वाबस्तगी मज़बूत होती है, यह हक़ीक़त है कि जिसे

भी इस्लाम को समझने और बरतने का मौका मिलता है तो वह हक़ीकत जानने के फौरन बाद दीने इस्लाम इख्तियार कर लेता है और इस्लाम की आला इन्सानी कद्रों और इस की मिसाली तहजीब का गिरवीदा हो जाता है और उसे मगरिबी तमद्दुन से नफरत हो जाती है।

पादरी टेरी जॉन ने जब कुर्आने मजीद के नुस्खों के जलाने का एलान किया था तो उसके फौरन बाद मैथोडिस्ट चर्च के पादरी रेवरेन्दर लेन्डर ने कलीसाओं में कुर्आने करीम तक्सीम करने का एलान किया और कुर्आन के मुताले के बाद यह बयान दिया कि इस्लाम अम्न और आश्ती, अफ्व व दर गुज़र, रवादारी और अद्ल व मसावात का मज़हब है, और लोगों को इस्लाम व कुर्आने मजीद के मुताले की दावत दी और कहा कि एक दूसरे के जज़्बात का खयाल रखा जाए और मुफाहमत और गुफ्तगू के जरीये मसाइल हल किये जाएं, हिन्दुस्तान की बाज तंजीमों और अफराद ने कुर्आने करीम में तर्जुमे और सीरते मुबारका से मुतअल्लिक किताबों को गैर मुस्लिम दानिश्वरों में तकसीम किया तो इस से बड़े मुसबत तअस्सुरात मौसूल हुए, उन्होंने एतिराफ किया कि इस्लाम अपने मानने वालों को सब्र व बरदाश्त और अफ्व व दरगुज़र की तल्कीन करता है जुल्म के बजाए इन्साफ की दावत देता है, फसाद के बजाए अम्न की दावत देता है।

मुसलमानों ने इसी दौर में जब हर चहार जानिब से हमले किये गये सब्र व तहम्मुल का मुजाहरा किया और दुश्मनाने इस्लाम की ज़बरदस्त मीडियाई यलग़ार और मुतशद्दिद ईसाई तंजीमों के जारिहाना हमले का सब्र व हिकमत से सामना किया और अपने महदूद वसाइल के जरीये इस्लाम को पेश किया, जिस के बड़े अच्छे नताइज बरामद हुए, इस सिलसिले में यूरोप, अमरीका, आस्ट्रेलिया, दीगर यूरोपियन मुल्कों में काइम इस्लामी सेन्टरों ने काइदाना रोल अदा किया है इस लिये कि इन सेन्टरों ने दुश्मन के घर में इल्मी, अमली और हकीमाना अन्दाज़ में इस्लाम का दिफाअ़ किया और दावते इस्लाम को इल्मी अन्दाज़ में पेश किया और मुलाकातों, मुजाकिरात और खैर सगाली मीटिगों के ज़रीये ग़लत फहमियों का इजाला किया, और इस्लाम के खिलाफ़ पाये जाने वाले शुकूक व शुबहात को मुअस्सर अन्दाज़ में दूर किया, इस हकीमाना रवैया, अच्छी तकरीरों और पुरअम्न गुफ्तगू से मुसलमानों को यह फाइदा हुआ कि बहुत से दुश्मन दोस्त बन गये और मुखालिफीन हमनवा हो गये।

इस्लाम दीने दावत है और दावत इस बात की मुतकाजी होती है कि मुखातब का एहतिराम मलहूज़ रखा जाए, माहौल और सूरते हाल की रिआयत की जाए, दाओ को अपने पैगाम पर पूरा यकीन हो और अन्दाज़े तखातुब, मुखातब के फहम के मुताबिक़ हो और उनसे दोस्ती और एतिमाद हासिल करने की कोशिश की जाए, इसलिये कि सख़्ती, नफरत और अदावत के माहौल में दावत का अमल कारगर नहीं हो सकता इसी वजह से कुर्आने मजीद में जगह जगह पर मुसलमानों को सब्र, दूसरों के मजहब और उनके जज़्बात का एहतिराम और दुश्मनी व अदावत से दूर रहने की तल्कीन की गई है "और जो लोग सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं और उसकी खुशनूदी के तालिब हैं उनके साथ सब्र करते रहो और तुम्हारी निगाहें इनमें से (गुजर कर और तरफ) न दौड़े" (सूरः कहफ:28)।

"और जो दिल आज़ार बातें यह लोग कहते हैं इन को सहते

**शेष पृष्ठ ..... 17 पर**

# इलहाद व बेदीनी और हमारा फर्ज़

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमजा हसनी नदवी

जिन मुसलमान वालिदैन को अपना दीन अज़ीज है और वह इस्लाम के लिये हर तरह की कुर्बानी और ईसार को अपने लिये फ़र्ज समझते हैं वह कभी भी इस को बर्दाश्त नहीं कर कर सकते कि वह या उनके बच्चे दीन से दूर रह कर ज़िन्दगी गुज़ारें। वह अपने बच्चों की दीनी तालीम व तरबियत के लिये हर मुम्किन कोशिश करते हैं, बुरी सोहबत से बचाने की फिक्र करते हैं, उनको सच्ची बातें बतलाते हैं, बुजुर्गों के वाकिआत सुना–सुना कर दीन का जज़्बा बेदार करने की कोशिश करते हैं और सख़्त हालात में भी मायूस नहीं होते, उन देशों में जहाँ मुसलमानों का दीनी हैसियत से कोई निजाम काइम न था न उनके बच्चों की दीनी तालीम व तरबियत का कोई इन्तिजाम था बल्कि हुकूमत की तरफ से जो तालीम दी जाती थी वह मुसलमान बच्चों के लिये दीनी हैसियत से जहर से कम न थी, उस तालीम को हासिल करके मुसलमान बच्चा जो कुछ भी बनता मुसलमान और खुदा का परस्तार नहीं रह सकता था। ऐसे नाजुक मौके पर दीन की तड़प रखने वाले वालिदैन ने अपने बच्चों से गफलत नहीं की बल्कि उनकी दीनी तालीम का खुद इन्तिजाम किया, खुद वक्त निकाल कर उनकी दीनी तरबियत की, और सरकारी तालीम के ज़हर से उनको बचा लिया और उनकी कोशिश से नस्लों की नस्लें इलहाद व कुफ्र से बच निकलीं और सिर्फ इस्लाम पर काइम ही नहीं रहीं बल्कि इनमें बाज़ ऐसी शख्सियतें पैदा हुईं जिन के हाथों पर हज़ारों इन्सान जो खुदा से दूर थे ताइब हुए, जिनके वालिदैन ने सख्त नामुवाफिक हालात में भी अपने बच्चों को दीनी तालीम दिलाई।

आज का दौर भी यही नज़ाकत लिये हुए है, हमारे मुल्क में जो सरकारी तालीम राइज है और जो निसाब स्कूलों में पढ़ाया जाता है वह भी अपने मवाद और अपनी तस्वीरों के लिहाज़ से मुसलमान बच्चों को उनके अज़ीज दीन से दूर करने और शिर्क की तरफ खींचने वाला है। आप पूरे निसाब पर नज़र डालिये हज़ारों सफहात में गैर इस्लामी कल्चर की तारीफ उसकी दावत व तलकीन ही मिलेगी। न मुसलमानों के बुजुर्गों का नाम मिलेगा न उनकी खिदमतों और कारनामों का तज़किरा मिलेगा, अगर कहीं कहीं कोई तजकिरा आ जाता है तो किसी तारीखी इमारत का या किसी बादशाह का।

नतीजा यह है कि मुसलमान बच्चों के मासूम दिमाग मुतअस्सिर होते हैं। स्कूल में वह पढ़ते हैं, घरों में उनको कोई दीन की बात बताता ही नहीं, रफ्ता–रफ्ता वह अपने बुजुर्गों तक से नावाकिफ हो जाते हैं, वह अपने दीन से अव्वल तो गाफिल होते हैं अगर जानते हैं तो सिर्फ इतना कि हम मुसलमान हैं। लेकिन साथ–साथ यह तअस्सुर भी दिमाग़ में छाया होता है कि हमारा दीन ज़िन्दा नहीं और न हमारे यहां कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ। स्कूलों की इस तालीम ने अपने खुले असरात पैदा करने शुरु कर दिये हैं, इन हालात ने हर दीनी जज़्बा रखने वाले वालिदैन को बेकरार कर रखा है। जरूरी है कि हर मुसलमान वालिदैन अपनी औलाद पर निगाह रखें, वह अपने बच्चों को ऐसे मदारिस में दाखिल करें जहाँ आम किताबों के साथ–साथ दीनी किताबें भी दाखिल हों।

**शेष पृष्ठ ..... 21 पर**

# क़ुर्आन की सेवा सबसे उत्तम सेवा है

–हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

पवित्र कुर्आन की सेवा सबसे उत्तम सेवा है। अल्लाह तआला ने कुर्आन को मानव जाति के उपदेश तथा निर्देश के लिये सरल बना दिया है। इसको इस प्रकार समझिये कि किसी हाई करन्ट तार पर रबर चढ़ा दिया जाता है। यदि उसके भीतर के तार पर हाथ पड़ जाए तो मनुष्य जल कर राख हो जाए। अल्लाह ने इसको सरलता से ढक दिया है, यह इस कारण कि अल्लाह का भक्त अपने स्वामी से दासता का सम्बन्ध रख सके। जो लोग शब्दों की आत्मा तथा उसकी वास्तविकता तक पहुँच जाते हैं उनके हृदय काँप उठते हैं, और वह उसे सहन नहीं कर पाते। कुर्आने मजीद की सेवा ऐसे लोगों ने भी की है जो मुसलमान न थे, उनको सांसारिक लाभ तो मिला पर ईमान न होने के कारण सम्पूर्ण लाभ जो इस लोक तथा परलोक में मिलने वाला है, उससे वह वंचित रहे। मुसलमान कुर्आन की सेवा करता है तो उस पर आस्था रखते हुए उसके आदेशों का पालन करने की इच्छा से उसकी सेवा करता है। अतः इस की सेवा से कहीं से कहीं पहुँच जाता है। कुर्आने मजीद को फैलाना बड़ा शुभ कार्य है इस का अनुभव बार–बार हुआ है कि जिसने कुर्आने मजीद को खुले हृदय से पढ़ लिया उसका जीवन बदल गया। आज अधिक मिलने के लालच ने मानव को अचेत कर दिया, शान्ति छीन, ली सब ने अपने को भौतिकता तथा मौलिक संस्कृति को सौंप दिया है। सांसारिक सम्मान तथा धन की इच्छा में सबके सब उसी में लगे हुए हैं, अधिक प्राप्त करने की इच्छा में नैतिकता से विमुख हो गये हैं।

मुहम्मद असद एक पत्रकार तथा राहिब बाप के बेटे थे। पत्रकारिता कार्य हेतु अफगानिस्तान गए वहां, पवित्र कुर्आन का अध्ययन आरम्भ किया, पवित्र कुर्आन ने उनको ऐसा प्रभावित किया कि वह किसी ईसाई नाम से मुस्लिम मुहम्मद असद हो गये। इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात वह स्पेन चले गये वहां इस्लाम के प्रसार में लग गये और वहीं उनका देहान्त हुआ। अल्लाह तआला उनको जन्नतुल फिरदौस में उच्च स्थान दे।

यह वास्तविकता है कि जिसने पवित्र कुर्आन को निर्पेक्ष होकर पढ़ा वह बदल गया। नबी सल्ल0 के साथियों की आधी संख्या पवित्र कुर्आन सुन कर ईमान लाई तथा शेष नबी सल्ल0 की जीवनी से प्रभावित होकर ईमान लाये। हज़रत उमर रज़ि0 की घटना बहुत प्रसिद्ध है। उनकी बहन कुर्आन का पाठ कर रही थी, हज़रत उमर के आते ही चुप हो गई और पवित्र कुर्आन को छुपा दिया, उन्होंने कहा लाओ दिखाओ, बस कुछ आयत को सुनते ही उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया, और दूसरे सहाबा (हुजूर सल्ल0 के साथी) नबी सल्ल0 की जीवनी और उनके स्वभाव को देखकर ईमान लाए। पवित्र कुर्आन आकाश की वस्तु है अल्लाह ने हमारे लाभ के लिये धरती पर उतार दिया ताकि हम हिदायत (सत्य मार्ग) पाएं।

पवित्र कुर्आन में वास्तव में एक आकर्षण शक्ति है कि जो उसे पढ़ता है कुर्आन उसे आपनी ओर खींच लेता है, उसमें मानव के मस्तिष्क को वश में लेने और उसमें सुधार करने की भरपूर योग्यता है। पवित्र कुर्आन को साधारण जनों तक पहुँचाना पूरी उम्मत का कर्तव्य है। इस कतव्य के पूरा करने में देश का भी लाभ है और मानवता का भी।

अल्लाह तआला जो रहमान व रहीम है वह चाहता है कि मनुष्य सत्य मार्ग पर आए। वह चाहता है कि लोग जहन्नुम से छुटकारा पाएं। अतः पवित्र कुर्आन को सरल कर दिया ताकि उसके द्वारा अर्थात उसके आदेशों पर चल कर जहन्नुम से बचा जाए। कुर्आन में एक आकर्षण है कि जो भी उसे पढ़ेगा बहुत भला मालूम होगा। जो लोग अरबी भाषा नहीं जानते उनको भी देखा गया कि उसके बोल सुन कर वह इतने प्रभावित हुए कि रोने लगे। समझ कर पढ़ने वाले जब उस का पाठ करते हैं तो उससे इतना प्रभावित होते हैं कि सहन करना कठिन हो जाता है और ऐसा अनुभव होने लगता है कि हृदय फट जाएगा। अल्लाह ने इसमें बड़ी शक्ति रखी है, आत्मिक शक्ति, आकाशीय शक्ति और ऐसा क्यों न होता कि यह ईशवाणी (कलामे इलाही) है। इससे विद्वान लाभ उठाते हैं और साधारण ज्ञान रखने वाले भी लाभ उठाते हैं, इस में दोनों के लिये लाभ रखा गया है।

मानवता के उद्धार के लिये अल्लाह ने यह कलाम (वाणी) प्रदान किया। नबी सल्ल0 को जब रसूल बना कर भेजा गया तो यह वह समय था कि अल्लाह ने सृष्टि की ओर देखा तो सृष्टि की दशा से उसे घृणा होने लगी, फिर उसे करूणा आई और नबी सल्ल0 को भेजा। अल्लाह ने रसूल सल्ल0 को ऐसा नबी बनाया कि उनकी जीवनी को देख कर लोग ईमान लाने लगे और अपनी वाणी (कलाम) को ऐसा बनाया कि लोग इसके प्रभाव से ईमान स्वीकार करने लगे। इससे अर्थात पवित्र कुर्आन के माध्यम से अल्लाह तआला से सम्बन्ध जुडता है, इस सम्बन्ध की अहमियत को समझ कर हमें काम करना चाहिये और जो भी इस सम्बन्ध से काम करेगा सफल होगा।

❖❖❖

**इल्म और मुफाहमत.....**

रहो और इन से अच्छे तरीके से किनारा कश रहो''।

(सूरः मुज़म्मिलः10)

"और लोगों की दुश्मनी तुम को इस बात पर आमादा न करे कि इन्साफ को छोड़ दो, इन्साफ किया करो कि यह परहेज़गारी की बात है''। (सूरः माइदाः)

गुज़िश्ता अहद में इस्लामी अमल के मैदान का यह अलमिया था कि दावत के लिये और मुल्की मुआमलात के लिससिले में सियासी अन्दाज़ इख्तियार किया गया जिस की वजह से हुक्काम, गैर इस्लामी माहौल में तालीम पाने वालों और खारिजी दुन्या के दुश्मनों से टकराव पैदा हो गया हालांकि वही दावती तरीक–ए– कार इख्तियार करना चाहिए जिसे हमारे अस्लाफ ने इख्तियार कर के दिलों को फतह कर लिया था, और पूरी दुन्या पर हुक्मरानी की और वह तरीका अच्छी बातें, हुस्ने अखलाक़, नर्मी, मुहब्बत, रवादारी और इन्सानी ग़मख्वारी का तरीका है।

मौजूदा सूरते हाल में दावत व इस्लाह के मैदान में तरीक–ए–कार बदलने की ज़रूरत है और जब मुखातब, माहौल और वक्त के तकाज़ों की रिआयत के साथ मुअस्सिर तरीक–ए–कार इख्तियार किया जाएगा तो दुश्मन भी दोस्त बन जाएंगे, इस्लामी तारीख में इस की सैकड़ों मिसालें मौजूद हैं। कुर्आने मजीद कहता है "सख्त कलामी का ऐसे तरीके से जवाब दो जो बहुत अच्छा हो, ऐसा करने से तुम देखोगे कि जिस में और तुम में दुश्मनी थी गोया वह तुम्हारा गर्म जोश दोस्त है और यह उन्हीं लोगों को हासिल होती है जो बर्दाश्त करने वाले हैं और उन्हीं को नसीब होती है जो बड़े साहिबे नसीब हैं।

(सूरः हा, मीम सज्दाः 34,35)

❖❖❖

# ? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ़्ती मुहम्मद जफ़र आलम नदवी

**प्रश्नः** एक शख्स ने रिहाइशी मकान के अलावा एक दूसरा मकान इस मकसद से खरीदा है कि उससे किराया हासिल किया जाए, इस मकान में एक स्कूल किराये पर चल रहा है, क्या इस मकान पर जकात वाजिब है, अगर जकात वाजिब है तो इस की अदायगी किस तरह होगी ?

**उत्तरः** मकान पर उस वक्त जकात वाजिब होती है जब मकान तिजारती मकसद से खरीदा गया हो, लेकिन अगर मकान ज़रूरत से ज़ियादा हो और तिजारती मकसद न हो बल्कि किराये पर लगाना या किसी और काम में इस्तेमाल करना हो तो उस पर जकात वाजिब नहीं।

(रद्दुल मुहतार 179/3)

**प्रश्नः** एक शख्स के पास कुछ बसें हैं जो किराये पर चलती हैं, सवाल है कि इन बसों की मालियत पर जकात वाजिब है या किराये पर ?।

**उत्तरः** बसों या उनकी मालियत पर जकात वाजिब नहीं होगी क्योंकि कसबे मआश (रोजी कमाने) के जो आवाल हैं उन पर जकात वाजिब नही है, फुक़हा ने सराहत की है कि इसी तरह हिरफत और पेशे के आलात पर भी जकात नहीं है। (रद्दुल मुहतार 183/3) अलबत्ता इन बसों से जो किराया हासिल हो अगर वह कद्रे निसाब हो और उस पर साल गुज़र जाए तो उस पर जकात वाजिब होगी। (फतावा हिन्दिया 167/1)

**प्रश्नः** क्या जकात वाजिब होने के लिये साल गुजरने की जो शर्त लगाई जाती है क्या हर तरह के माल में यह शर्त है ? या बाज में, वजाहत से बताएं।

**उत्तरः** खेती की पैदावार और फल में साल गुजरने की शर्त नही है बल्कि जैसे ही फसल कटे या फल तोड़े जाएं उसी वक्त उश्र निकालना वाजिब है इन के अलावा सोने चाँदी, नक्द रकम और सामाने तिजारत वगैरह में साहिबे निसाब होने के बाद उस माल पर साल गुजरना शर्त है।

(फतावा हिन्दिया 173/1)

**प्रश्नः** एक शख्स ने अपने घर के जेवरात रेहन (गिरवी) पर रख दिये हैं, दो साल गुजर चुके हैं, क्या इन जेवरात पर जकात वाजिब होगी या नहीं ?

**उत्तरः** रेहन (गिरवी) रखी हुई चीज़ों पर ज़कात नहीं है क्योंकि ज़कात वाजिब होने के लिये जरूरी है कि माले जकात मुकम्मल तौर पर साहिबे निसाब की मिल्कियत में हो, रेहन पर रखी हुई चीजें मुकम्मल तौर पर मिल्कियत में नही होती हैं इस लिये उन पर जकात नही है।

(फत्हुल कदीर 221/2)

**प्रश्नः** जो रक़म बैंक में फिक्स डिपॉजिट के तौर पर जमा हो क्या उस पर जकात वाजिब होगी?

**उत्तरः** पहली बात तो यह है कि फिक्स डिपॉजिट शरअन जाइज़ नहीं है फिर भी अगर किसी ने रकम बैंक में फिक्स डिपॉजिट कर दिया है तो उस पर जकात वाजिब होगी क्योंकि उस की हैसियत अमानत की होती है और अमानत वाली रकम पर जकात वाजिब होती है। (फत्हुल कदीर 221/2)

**प्रश्नः** मालिक मकान व दुकान के पास बतौर जमानत जो रकम

पेशगी जमा रहती है क्या उस पर जकात वाजिब है या नही? अगर जकात है तो मालिक मकान पर या किराये दार पर ?

**उत्तरः** मालिक मकान या मालिक दुकान के पास जो पेशगी रकम किरायेदार की रहती है उस की हैसियत रेहन की है और रेहन पर जकात वाजिब नहीं इसलिये उसकी जकात न मालिक मकान पर है और न किराये दार पर।

(फत्हुल कदीर 164 / 1)

**प्रश्नः** परॉविडेन्ट फण्ड की रकम जो अभी हासिल न हुई हो सरकार या कम्पनी ही के कब्जे में हो क्या उस पर ज़कात वाजिब हैं ? और जब रकम मिल जाए तो क्या पिछले सालों की भी जकात अदा करनी होगी ? रकम मिलने के बाद ज़कात वाजिब होने के लिये क्या उस पर साल गुजरना जरूरी है ? या मिलते ही जकात वाजिब होगी ?

**उत्तरः** परॉविडेन्ट फण्ड की रकम जो अभी हासिल न हुई हो, मिल्के ताम न होने की वजह से उस पर जकात नहीं है अलबत्ता यह रकम जब हासिल हो जाएगी और उस पर साल गुजर जाएगा तब जकात वाजिब होगी। उस मुद्दत की रकम जो कम्पनी या सरकार के कब्जे में थी उस पर जकात वाजिब न होगी।

(रद्दुल मुहतार 171–172 / 3

**प्रश्नः** जो लोग अपने घरों में कम्प्यूटर और इन्टरनेट या टी0पी0 वगैरह रखते हैं क्या उन पर जकात वाजिब है ?

**उत्तरः** कम्प्यूटर और दूसरे आलात अगर अपनी जरूरियात और इस्तेमाल के लिये हैं, तिजारत के लिये नहीं तो उन पर जकात वाजिब नहीं होती है।

**प्रश्नः** अक़ीका का मसनून तरीक़ा क्या है ?

**उत्तरः** अक़ीके का मसनून तरीका यह है कि बच्चे की पैदाइश के सातवें दिन अकीक़ा किया जाए। जानवर ज़ब्ह करने के बाद बाल मुण्डवाये जाएं और बाल के वज़न के बराबर चाँदी का सदक़ा कर दिया जाए। रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया है कि बच्चा अकीक़ा के बग़ैर औलिया पर गिरवी होता है इस लिये उसकी जानिब से सातवें दिन अकीका किया जाए, नाम रखा जाये और सर मुन्डवाया जाये। (तिर्मिज़ी 183 / 1)

अगर सातवें दिन अक़ीका न हो सके तो चौदहवें रोज और उस दिन भी न हो सके तो इक्कीस्वें रोज किया जाए। रसूलुल्लाह सल्ल0 का इरशाद है कि अक़ीका के जानवर को सातवें रोज ज़ब्ह किया जाए या चौदहवें रोज़। (बैहकी हदीस 19293) अगर इसकी भी रिआयत न हो तो किसी भी दिन अकीक़ा कर सकते हैं। पैदाइश के दिन या उससे एक दिन पहले या एक दिन बाद की कोई क़ैद नहीं।

(रद्दुल मुह्तार 2 / 3 / 5)

**प्रश्नः** अक़ीके की जिम्मेदारी किस पर है ? कुछ लोग नाना की जिम्मेदारी समझते हैं, इस बारे में शरई हुक्म क्या है ?

**उत्तरः** बच्चे की तालीम व तरबियत और कफालत की जिम्मेदारी बाप पर होती है। कुर्आने मजीद में बच्चे की निसबत बाप की तरफ की गई है, अल्लाह तआला का फरमान है, इस फरमान में बाप ही पर तमाम इखराजात की जिम्मेदारी डाली गई है। लिहाजा अकीका करना भी बाप के ज़िम्मे है न कि नाना के जिम्मे, हाँ अगर नाना अपनी तरफ से खुशदिली के साथ अकीका कर दे तो अकीका हो जाएगा। आप सल्ल0 ने अपने नवासों हज़रत हसन रज़ि0 और हुसैन रज़ि0 का अकीका खुद ही किया था। लिहाजा नाना भी अक़ीका कर सकता है लेकिन नाना के जिम्मे नहीं है।

(तिर्मिजी 183 / 1)

**प्रश्नः** क्या अक़ीके का गोश्त बच्चे के माँ–बाप खा सकते हैं ? आम तौर पर मशहूर है कि माँ–बाप अक़ीके का गोश्त नही खा सकते हैं, शरई हुक्म से वाकिफ कराएं।

**उत्तरः** अक़ीके का गोश्त बच्चे के माँ–बाप खा सकते हैं, क्योंकि कुर्बानी के गोश्त की तरह इस का हुक्म नफ्ल सदक़े का है न कि वाजिब सदक़े का, कुर्बानी करने वाला जिस तरह कुर्बानी का गोश्त खा सकता है उसी तरह अक़ीका करने वाला भी खा सकता है और दूसरों को भी खिला सकता है। शरहुल मुहज्जब में है कि अक़ीके का गोश्त जिस तरह दूसरों के लिए मसनून है उसी तरह औलिया के लिये भी खाना मसनून है।

(शरहुल मुहज्ज़ब 448/8)

**प्रश्नः** अक़ीके में लड़कों के लिये दो बकरे या दो हिस्से और लड़कियों के लिये एक बकरा या एक हिस्सा है, यह फर्क क्यों है।

**उत्तरः** पहली बात तो यह है कि लड़के और लड़कियों के अक़ीके में यह फर्क लाजिमी और जरूरी नहीं है बल्कि यह बेहतर और ऑला दर्जा है वरना दोनों के लिये एक एक बकरा देना काफी है। नबीये करीम सल्ल0 ने हज़रत हसन और हुसैन रज़ि0 के अकीके में एक–एक बकरी ज़ब्ह की थी जैसा कि इमाम बैहक़ी ने रिवायत नक्श की है। (बैहक़ी हदीस 19283) अलबत्ता बेहतर तरीक़ा लड़कों के लिये दो और लड़कियों के लिये एक बकरा है इस की हिकमत जाहिर में यह मालूम होती है कि शरीअत में लड़कों पर माली जिम्मेदारी भी रखी है जैसे बीवी और औलाद, और माँ बाप का नफ्का, मगर लड़कियों पर यह जिम्मेदारी नहीं है इसी वजह से विरासत में भी लड़कों को दोगुना हिस्सा दिया जाता है। कुर्आने मजीद में मर्दों की औरतों पर जो बरतरी बयान की है उस में इसी नफ्के (खर्चे) को फजीलत की वजह बताया है। (अन्निसा–34) लिहाजा मर्दों की इस फजीलत का तकाजा यह है कि पैदाइश के वक्त इस का शुकराना भी दो गुना अदा किया जाए। इस लिये अक़ीके में लड़कों की तरफ से दो बकरे जब्ह किये जाते हैं।

**प्रश्नः** क्या अक़ीके का गोश्त वलीमें में खिलाया जा सकता है? अगर शादी के मौके पर किसी बच्चे का अक़ीका कर दिया जाए और उस का गोश्त वलीमें के खाने में शामिल कर दिया जाए तो इससे वलीमा अदा हो जाएगा या नहीं और अक़ीका हो जाएगा या नहीं?

**उत्तरः** अक़ीके का गोश्त सदक–ए–वाजिबा में नहीं है, इसलिए उसको कोई भी खा सकता है। अगर वलीमे के खाने में अकीक़े का गोश्त शामिल कर दिया जाए तो दुरुस्त है, इससे दोनों अदा हो जाएंगे, अक़ीका भी वलीमा भी। याद रहे कि वलीमा के लिए जानवर जब्ह करना ज़रूरी नही। बैहकी की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने चन्द खुजूर, कुछ जौ और सत्तू पर वलीमा किया। (बैहकी–14506)

**प्रश्नः** अक़ीका कब तक किया जा सकता है? अगर किसी का अक़ीका बचपन में नहीं हुआ तो बड़ी उम्र में किया जा सकता है या नहीं?।

**उत्तरः** बालिग होने के बाद के बारे में कोई रिवायत नहीं मिलती है ताहम अगर कोई बड़ी उम्र में अक़ीका करे तो सुन्नत तो अदा होगी लेकिन चूँकि यह दमे शुक्र है इस लिये अक़ीका करना सवाब का बाइस होगा।

**प्रश्नः** अगर बड़े होने के बाद किसी बच्चे का अकीका किया जाए तो क्या बाल मुंडवाना जरूरी है?

**उत्तरः** पैदाइश के वक्त जो बाल हों अगर सातवें दिन अक़ीका हो

तो उस बाल का मुंडवाना और उसके बराबर चाँदी सदक़ा करना मुस्तहब है, बड़े होने के बाद अगर अक़ीका हो तो बाल मुंडवाने की जरूरत नहीं है।

(फत्हुल बारी–15/9)

**प्रश्नः** खेती में ग़ल्ला पैदा होता है उस पर उश्र का क्या हुक्म है?

**उत्तरः** खेती में जो गल्ला पैदा होता है अगर वह बारिश के पानी से हासिल हुआ है, सिंचाई नहीं करनी पड़ी है तो खेत से ग़ल्ला हासिल होते ही उश्र (दस्वां भाग) निकाल कर जकात के मुस्तहकीन पर खर्च किया जाएगा और अगर सिंचाई के बाद गल्ला पैदा हुआ है तो निस्फ उश्र (बीसवां भाग) निकाल कर ज़कात के मुस्तहकीन को देना होगा।

**प्रश्नः** आज कल खेती में खाद वगैरह पर बड़ा खर्च आता है क्या उश्र के ग़ल्ले से यह खर्च निकाला जाएगा ?

**उत्तरः** खेती पर चाहे जितने अखराजात आए वह उश्र या आधे उश्र से अलग नहीं किये जा सकते, सींचे बिना गल्ला पैदा हुआ है तो उसमें दस्वां भाग और सींचने से गल्ला पैदा हुआ है तो उससे बीसवां भाग निकालना होगा।

**प्रश्नः** जो खेती बटाई पर होती है उसका उश्र कौन निकालेगा ?

**उत्तरः** बटाई से जो गल्ला मिला, उस पर भी बेसींचे पैदा होने वाले ग़ल्ले पर दस्वां हिस्सा और सींचे हुए से बीस्वां हिस्सा बटाई के दोनों साझे पर अपने अपने पाए हुए गल्ले से निकालेंगे।

**प्रश्नः** फरवरी 2011 के अंक के पहले पेज पर कई जगह अल्लाह (ह) के बिना छपा है क्या यह दुरुस्त है ?

**उत्तरः** नहीं यह हरगिज़ नहीं दुरुस्त है। मेरी ग़फलत से ऐसा छप गया जिस के लिए खेद है। वैसे पहले पेज पर जहाँ–जहाँ अल्लाह आया है वहां अंतिम (ह) की आवाज़ न निकाली जाएगी परन्तु (ह) लिखा जरूर जाएगा। कोई उर्दू, अरबी न जानने वाला आवाज़ सुन कर अगर अल्लाह अल्लाह की जगह अल्ला अल्ला लिख कर आवाज महफूज़ कर लेता है तो वह मुआफी के काबिल है जबकि राज पाल हिन्दी शब्दकोश में अल्ला का अर्थ ईश्वर लिखा है लेकिन दूसरों को अल्लाह में ह छोड़ना दुरुस्त नहीं। यह बात अलग है कि लिखा हो: "बोलो बच्चो अल्लाह अल्लाह" या लिखा हो "अब्दुल्लाह के राज दुलारे" दोनों जगह ह जाहिर करने से शिअ़र (शेर) सहीह न होगा पढ़ने वाले को बताया जाएगा कि यहां ह की आवाज न निकाली जाएगी। इसी अंक के कवर पर सल्लम के स्थान पर सलल्लम और भाषण के के स्थान पर भाषड़ छप गया है जिसपर भी खेद है।

**इलहाद व बेदीनी.....**

अगर ऐसा करना मुश्किल है तो जब बच्चा स्कूल से पढ़ कर आए तो उस से पूछें और जो कुछ उसने अपने दीन के खिलाफ पढ़ा है उसके जहर से उसको बचाएं, खारिजी औक़ात में उसको ऐसे उस्तादों के पास बैठाएं जहां बैठ कर वह अपने दीन से वाकिफ और खबरदार हो, जगह–जगह ऐसे मकातिब खोलें जिनमें ऐसा निसाब राइज किया जाए जो ज़बान के साथ–साथ दीन के अक़ाइद और आमाल पर हावी हो। यही चन्द सूरतें हैं जिन की वजह से हमारी नस्लें कुप्रभाव, इल्हाद और शिर्क व बेदीनी से महफूज रह सकती हैं।

❖❖❖❖

# नेकी कर दरिया में डाल

—ए0जे0 खान

धन दौलत के बल पर नाम तो कमाया जा सकता है, लेकिन किसी गरीब का दिल नहीं जीता जा सकता। मुसीबत में किसी के काम आना, किसी दुखियारे के आँसू पोंछना, किसी असहाय की सहायता करना सब के बस की बात नहीं। समाज में बिरले ही पुरुष ऐसे होते हैं जो गरीबों और मोहताजों के लिये सब कुछ न्यौछावर करने को तत्पर हों, इस भौतिकवादी युग में जन कल्याण और समाज सेवा आदि शब्द निरर्थक बन कर रह गये हैं।

आज कोई भी काम बिना नुमाइश और दिखावे के नहीं होता। इधर कुछ वर्षों से जाड़ा आते ही कम्बल बांटने की होड़ सी लग जाती है। पहले प्रचार करके घरों पर भीड़ एकत्र करते हैं, पास–पड़ोस के लिये नुमाइश का ज़रिया बनते हैं, घन्टों भीड़ से प्रतीक्षा कराते हैं, तब कम्बल बांटते हुए फोटो खिंचवाते हैं, और उसे झूठी प्रशंसा के लिये समाचार पत्रों में छपवाते हैं। लग–भग यही तरीका मुसलमानों ने भी जकात देने के लिये अपना रखा है। जब कि इस्लाम धर्म में ऐसा करना शरअन मना है। बांटने वाले के दुष्टिकोण से यह तरीका सही हो सकता है, मगर इस से ज़रूरत मन्द और हक़दार वंचित रह जाते हैं।

केवल वाह–वाही से काम नहीं बनता। असली गरीबों और मोहताजों का पता लगाया जाये, उनके घरों तक पहुँचा जाये और उनका हक उनको दिया जाये। हम सभी जानते हैं कि अधिकांश जरूरत मन्द और मोहताज चलने–फिरने में असमर्थ होते हैं, और वे आप तक नहीं पहुँच पाते। यदि कम्बल बांटना है तो जाडे की रातों में शहर का भ्रमण किया जाये, सार्वजनिक स्थानों तक जाया जाये, ठन्ड से ठिठुरते हुए लोगों की खोज की जाये और उन्हें अपने हाथों से कम्बल उढ़ाया जाये।

आज समय की मांग है कि इस दुखद स्थिति को बन्द किया जाये, इससे जरूरत मन्दों और मोहताजों को कोई लाभ नहीं होने वाला। बल्कि सच्चे मन से निः स्वार्थ निर्धनों की सहायता की जाए तभी हम नेकी कमाएंगे, अन्यथा किसी का भी भला होने से रहा।

❑❑

## प्रेम सन्देशा

एक प्रेमी आया है।
प्रेम सन्देशा लाया है।।
जिसमें प्रेम का अंश नहीं।
वह मानव का वंश नहीं।।
प्रेम सृष्टि विधाता से।
दुन्या के निर्माता से।।
प्रेम ईश के भक्तों से।
सत्य मार्ग के सन्तों से।।
प्रेम पिता और माता से।
प्रेम बहन और भ्राता से।।
प्रेम हमें सत्कर्मी से।
प्रेम हर एक परिश्रमी से।।
प्रेम हो अपने देश से।
देश के इक इक खेत से।।
प्रेम देश के नेता से।
प्रेम देश की जनता से।।
प्रेम हो ध्यान और ज्ञान से।
लाभ जनक विज्ञान से।।
प्रेम नहीं शैतान से।
प्रेम नहीं अभिमान से।।
प्रेम नहीं धन दौलत से।
प्रेम नहीं कुसंगत से।।
प्रेम न भ्रष्टाचार से।
प्रेम न अत्याचार से।।
प्रेम न रक्तापात से।
प्रेम न आतंकवाद से।।
प्रेम न डाका चोरी से।
प्रेम न रिश्वत खोरी से।।
गीत प्रेम के गाओ तुम।
सत्य प्रेम अपनाओ तुम।।

# स्वयं को पहचानिये अन्यथा भारविहीन हो जाएंगे

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी

अनु०— नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

**नोटः** ये लेख जामिया इस्लामिया मुजफ्फरपुर, आजमगढ़, सम्बद्ध दारुलउलूम नदवतुल उलमा में विद्यार्थियों के सामने जामिया के संरक्षक की उपस्थिति में दिया गया व्याख्यान है। टेपरिकार्डर द्वारा अब्दुल्लाह प्रतापगढ़ी ने इसे नकल किया है।

प्रबुद्धजनों और प्रिय छात्रों! बड़ों के सामने बातें नहीं की जाती, हमारे बड़ों ने यही सिखाया है, लेकिन जब सबक सुनाना हो तो ये भी बताया है, ताकि हमारे बड़े गलतियों को ठीक कर दें। तो मैं इस अवसर पर अपना सबक सुना रहा हूँ। इस कारण मेरे सम्बोधित आप हैं, ज़रा ग़ौर से सुनियेगा, कई बातें हैं जो सामने पेश की जा रही हैं।

मेरे प्यारों! आज आप पूरे विश्व में बड़ी संख्या में हैं, इतनी बड़ी संख्या में कोई नहीं है और जो आपसे बड़ी संख्या में होने का दावा कर रहा है (जैसे कि ईसाई कर रहे हैं) वह सबसे बड़ा झूठ बोल रहा है, क्योंकि वह इसी झूठी संख्या के बल पर जी रहा है, उसके पास इसके अतिरिक्त कोई आधार नही। हमारी आपकी संख्या बहुत बड़ी है लेकिन ये भी सत्य है कि हम आप बेकीमत और बेवज़न हैं। हदीस में भविष्यवाणी पहले से थी कि उम्मत बेवज़न हो जाएगी। हदीस का भावार्थ ये है कि जिस प्रकार पानी के ऊपर झाग आ जाता है और ऊपर–ऊपर रहता है उसके अन्दर कोई वजन नहीं होता, बह जाता है, सारी क़ौमें सारी उम्मतें आप पर टूट पड़ेंगी और आपके पास जो कुछ है उस पर टूट पडेंगी। आज दोनों ही हो रहा है, इसलिए ये तो नहीं कहता कि वह दौर आ गया है कि आप इतने हल्के हो गये लेकिन हल्के होने की रफ्तार बहुत तेज़ है, हैसियत खोते चले जा रहे हैं, इसलिए मामला तनिक विचारणीय है।

## अल्लाह ने आपको वज़नदार बनाया है–

ख़ुदा ने आपको वज़नदार बनाया है लेकिन हमने अपने हाथ से आपने को बेवजन कर लिया, क्योंकि कुर्आन में आपको "सकलान" से याद किया गया है "अय्युहस्सकलान" आप वज़नदार हैं, आप भारी भरकम हैं, आपके भारी भरकम होने को ख़ुदा ने साबित भी कर दिया कि समस्त सृष्टि को आदेश दिया गया और उन्होंने आपको पूज्य (मस्जूद) बनाया। इसलिए कि जब फरिश्तों को आदेश दिया गया तो फरिश्तों से जितने नीचे थे वह तो अपने आप ही उसमें शामिल हो गए, इस प्रकार आपको पूजनीय बनाकर मानो ये कह दिया कि जो स्वयं सज्दा किये जाने वाला हो चुका है उसको सज्दा करने वाला नही बनना चाहिये। ये कोई आम बात नही है। ये भी कहा गया है कि पूरी दुनिया आपकी सेवक है, आपकी नौकर है, आपकी गुलाम है और आपको अल्लाह ने अपने लिए बनाया है। अपनी बन्दगी के लिए पैदा किया है। आप एक के गुलाम हैं, शेष (समस्त) जगत, ब्रह्माण्ड आपकी सेवा में लगा हुआ है, अब यदि ब्रह्माण्ड के किसी कण के सामने आप अपना मत्था टेक देते हैं और उसके आगे हाथ फैलाते और मांगते हैं तो आपने अपने को भार विहीन बना लिया, अपना मूल्य घटा दिया, इसलिए यदि आप ग़ौर करें कि जो लोग अनेकेश्वरवाद (शिर्क) में डूबे होते हैं उनका नक्शा क्या खींचा गया है? कुर्आन में है कि आपको अर्थात मानव को सज्दा किया गया था

लेकिन आप अपने सेवक के आगे झुकने लगे, यदि किसी का दास, किसी का सेवक आ जाए और वह हाथ जोड़ कर अपने स्वामी के सामने खड़ा हो लेकिन वह महोदय जो वास्तव में स्वामी हैं उसी सेवक के सामने झुकने लगें तो क्या हैसियत रह जाएगी उनकी? क्या कीमत रह जाएगी? कुर्आन मे उसका नक्शा इस प्रकार खींचा गया है जैसे कि वह आसमान से गिरा हड्डी पसली एक हो गई अथवा पक्षी उसे दबोच ले गए या फिर हवाएं ले उड़ी और बहुत दूर उठाकर फेंक दिया। जाहिर है कि जब गिरेगा तो फना हो जाएगा। अल्लाह ने हमें वज़नदार बनाया है, हमको मूल्यवान बनाया है मगर हमने और आपने अपनी क़ीमत खो दी। हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 अक्सर तहज्जुद में एक फारसी शेर पढ़ते थें, अनुवादः "अपनी कीमत बढ़ाइये? हल्के और सस्ते न रहीये" कहां तुम्हारा भाव लग रहा है? कहाँ तुमको बेचा जा रहा है?।

आज इन्सान को क्या हो गया है? हमारे यहां एक बुजुर्ग थे, वह नदवा की जो सड़क है वहां पर खड़े थे। हज़रत मौलाना राबे हसनी नदवी साहब के बड़े भाई मौलाना मुहम्मद सानी साहब रह0 से कहने लगे कि ये जो गाडियां दिखाई दे रही हैं ये क्या है? मोटर गुज़री तो कहने कि लगे ये कार है, ये मोटर है, ये साइकिल है, ये अभी रिक्शा गुज़रा। उन्होंने कहा कि ये कुछ नहीं गुज़रा, ये दस रूपये, ये पाँच रूपये, ये ढ़ाई रूपये गुज़रे, ये उनकी कीमत है जो मोटरों से गुजर रहे हैं, मोटरों–गाडियों से कीमत नहीं पैदा होती है, वजन किससे पैदा होता है ये आपको देखना पड़ेगा। अब यदि आप कुर्आन व हदीस में देखें तो आपको समझ में आ जाएगा कि वजन किसको कहते हैं यदि आप अपनी मालिक वाली हैसियत और स्वयं को सज्दा किये जाने वाले की हैसियत को शेष रखते हुए, जीवन व्यतीत करते, अल्लाह के आदेशों को मानते, उसकी बन्दगी करते अर्थात एकेश्वरवाद का जाम पीकर रहते तो वज़नदार होते। लेकिन आज मुसलमानों का हाल जिसका नक्शा स्वयं कुर्आन में खींचा गया है कि "उनमें अधिकतर आस्था (ईमान) नहीं लाते" आज आस्थाएं दांव पर लगी हुई हैं, बड़े–बड़े विद्वान (उलमा) की आस्था दुरूस्त नहीं है, मैं यहां बैठकर कह रहा हुं और मौक़ा होगा तो उदाहरण देकर समझाऊँगा। हमारे हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 को उनकी माँ ने पत्र लिखा कि अपनी आस्था की चिन्ता करो। बड़ा ही विचित्र पत्र है। मैं तो बस एक जुम्ला सुना रहा हुँ, लिखा है कि "अपनी आस्था (अक़ीदे) की फिक्र करो" इस समय अच्छे–अच्छे उलमा का अक़ीदा ठीक नही है। और ये लिखा है आज से सत्तर साल पहले। तो अब सत्तर साल में तो अक़ीदा अच्छा नहीं हो गया बल्कि हालात तो बद से बदतर हो रहे हैं।

## एकेश्वरवाद की आस्था हेतु चिन्ता कीजिए–

इस समय हिन्दुस्तान में जो हमारा देश है उसमें हमारे लोगों का अपनी आस्था की चिन्ता नही है। हालांकि कुर्आन ने "मा तअ्बुदून मिम बअ्दी" के द्वारा सबको सावधान कर दिया है। हज़रत याकूब अ0 ने अपने घराने के सदस्यों को जीवन काल के अन्तिम क्षणों में इकट्ठा किया और आस्था (अक़ीदे) की ओर से इत्मिनान चाहते हुए पूछा था कि मेरे बाद किस की इबादत करोगे। जब नबियों के घराने को अपनी आस्था की चिन्ता है तो आपको और हमको नहीं होनी चाहिये? जबकि हमारा हाल ऐसा है कि आस्थाएं कब और किधर मुड जाएँ और किस चीज़ से अस्त व्यस्त हो जाएँ। इसी कारण आज हमारी स्थिति बदल गई है और आस्था नाम की कोई चीज़ नहीं रह गई है। देखिए एक बात याद रखिये आस्था इसका नाम नही है कि सिर्फ जबान से

"लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्र सूलुल्लाह" कह दिया। निःसन्देह ये आस्था है लेकिन आस्था का सम्बन्ध दिमाग और दिल से है, सिर्फ ज़बान से नहीं। आस्था असाधारण चीज़ है। अक़ीदा जब दिलो दिमाग में आता है तो इंकलाब बरपा कर देता है, उसकी सोच बदल जाती है, हृदय और भावनाएं बदल जाती हैं और उसके नतीजे में उसके कर्म बदल जाते हैं। उसकी शक्ति असाधारण हो जाती है। हौसला बुलन्द हो जाता है। बड़ी–बड़ी ताकतें उसके सामने दम नहीं मार सकतीं, किसी की मजाल नही कि उसके सामने खड़ा हो जाए। इसलिए हदीस में आता है कि "एक मुसलमान का कत्ल अल्लाह के नज़दीक पूरी दुनिया की तबाही से बढ़कर है"। अर्थात जो एकेश्वरवादी होता है और एकेश्वरवाद का जाम चढ़ाए होता है वह अल्लाह के समीप इतना बहुमूल्य होता है कि समस्त जगत एक ओर, उसका अस्तित्व एक ओर। हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 ने "तारीख दावत व अज़ीमत" में लिखा है, उठाकर देख लीजिए, आप पढ़ेंगे तो दंग रह जाएंगे। ये सब उसी एकेश्वरवाद का परिणाम है, जो उन महामनाओं को अल्लाह ने गैर मामूली तौर पर दिया था।

आवश्यकता इस बात की है कि हम भारी भरकम हो जाएं। वज़नदार हो जाएं। अपनी कीमत को पहचानें। आपने हदीस में पढ़ा होगा कि आप (सल्ल0) ने कहा कि मैं दो भारी चीज़े (सक़लैन) को छोड़ कर जा रहा हुँ, यदि तुमने उन भारी भरकम चीज़ों से अपना सम्बन्ध बनाए रखा तो तुम भी भारी–भरकम हो जाओगे, एक तो अल्लाह की किताब है जो खुद भारी–भरकम है और अल्लाह ने उसके अन्दर जो असाधारण शक्ति डाली है, उसका अनुमान हमको और आपको नहीं होगा कि अल्लाह की किताब क्या है?

## अरबी भाषा वज़नदार ज़बान

केवल अल्लाह की किताब की भाषा को ही ले लीजिए, जो अरबी भाषा में है। और ये अरबी भाषा समस्त भाषाओं में सबसे अधिक भारी भरकम है, समस्त भाषायें भारविहीन, अरबी भाषा भारवान, समस्त भाषाएं मिट जाने वाली, अरबी भाषा शेष रहने वाली, समस्त भाषाएं जो पहले थीं वह मिट चुकीं, जो अब हैं मिट जाएंगी। जिन–जिन भाषाओं में पवित्र ग्रन्थ उतरा, वह किताबें भी नहीं रही, भाषाएं (ज़बानें) भी नहीं रहीं। और ये भी अल्लाह की शान है कि अल्लाह ही ज़बानों को पैदा करता है और वह ज्ञान को फैलाता है। न वह भाषाएं रहीं न वह ज्ञान रहे जो उन भाषाओं से सम्बद्ध थे। ये अरबी भाषा शेष रहेगी और उससे सम्बद्ध ज्ञान शेष रहेंगे।

हज़रत सुलेमान अ0 को आप देखिये, उन्होंने मलिक–ए–सबा के तख़्त को हाज़िर करने के लिए कहा तो जिन्न ने कहा कि बैठक समाप्त होने से पहले–पहले हाज़िर कर दूंगा। लेकिन एक मौलवी साहब जो किनारे बैठे हुए थे, बोल पड़े, हुजूर! ये लीजिए सामने है, मगर अब इसका जानने वाला कोई नहीं, तो जो ये दावा करे वह झूटा है, इसी तरह नुकूशे सुलेमानी का जानने वाला कोई नहीं। सब झूठे हैं, इसलिए कि ये इल्म रूख्सत हो गया। हज़रत सुलेमान अ0 के साथ इसका दौर चला गया। उनके दौर के ज्ञान मिट गए और ये हदीस से भी साबित है। एक हदीस में आता है कि एक व्यक्ति आप (सल्ल0) की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने कहा कि एक विधा है रेखा (खत) खीचने की, एक नबी खींचा करते थे तो आप (सल्ल0) ने ये नहीं कहा कि न खींचो, उसमें नबी के बारे में शक पैदा हो सकता है। आप (सल्ल0) ने कहा कि यदि जानते हो तो करो और स्पष्ट है कि जानते नहीं और विलुप्त हो चुकी चीज़ों के पीछे पड़ना कोई होशियारी का काम नही है, बस बात ख़त्म हो गई। ये अल्लाह की वह शान है जिसका

जलवा हर जगह, हर दौर, हर ज़माने में नज़र आता रहा और आता रहेगा। अब इस ज़माने में अल्लाह ने ऐसी ज़बान दे दी है, जो उसी तरह बाक़ी है। इसलिए सबसे बड़ी ज्ञानात्मक पूंजी इसी भाषा में है और यही कभी न मिटने वाली अमर भाषा है, जिन लोगों ने इस भाषा को मिटाने का प्रयास किया वह मिटा दिये गये। बहुत से लोगों ने शैली बदलने की चेष्टा की अमिया को आम करने की कोशिश की। अरबी को मिटाने का प्रयास किया लेकिन ये समस्त चेष्टाएं बेकार गईं, फिर भी वह थोड़ी बहुत मेहनत करते रहते हैं लेकिन उनकी मेहनत से कुछ होने वाला नहीं है। क्योंकि वह एक ऐसी भाषा से टकरा रहे हैं जिसको स्थिरता और स्थायित्व अल्लाह के दरबार से मिला हुआ है, कोई इसको मिटा नहीं सकता। कुर्आन में कहा गया है "निःसन्देह हमने ही कुर्आन उतारा और हम ही उसकी रक्षा करने वाले हैं"।

स्पष्ट है कि कौन मिटा सकता है उस भाषा को जो ऊपर से स्थायित्व और अमरत्व का प्रमाण लेकर आई है और अल्लाह ने उसके अन्दर ऐसी चाशनी रखी है, ऐसी कशिश रखी है, जिसको मैं यूं कहता हूँ कि कुर्आन इतना सुन्दर स्वयं है कि यदि आप उसको सुन्दर बाहरी चीज़ों से बनाना चाहें तो बिगड़ जाएगा। इसीलिए यहूदियों ने कुचेष्टा की कि इसको म्यूज़िक से पढ़ाया जाए, जिस प्रकार उनकी किताबें बिना म्यूज़िक के अच्छी मालूम नहीं होतीं, उसी काम में मुसलमानों को लगा दिया जाए। लेकिन बेचारों को मालूम नहीं कि यहाँ सौन्दर्य व सुन्दरता का वह स्थान है कि उसमें थोडा बहुत बाहर से लेकर आप आ जाएं तो ख़राब हो जाएगा। जैसे कोई बहुत सुन्दर है उस पर खूब पाउडर थोप दें तो बेचारे की सुन्दरता का क्या अंजाम होगा। जो चेहरे बिगड़े हुए होते हैं उनको बनाने के लिए कहीं जाना पड़ता है और जो स्वयं सौन्दर्य और सुन्दरता की आकृति है उसे कहीं जाना नहीं पड़ता। वैसे ही अल्लाह ने कुर्आन को रूपवान और सुन्दर बनाया है कि कहीं उसको जाने की और कुछ बाहर से लेने की आवश्यकता नहीं है। ये चमकता है, इसके अन्दर दिलरुबाई है और दिलकशी है। उसमें आकर्षण है, कशिश है। और उसमें सरलता है, प्रवाह है, जवानी है तथा उसमें स्थायित्व व अमरत्व का रहस्य छुपा हुआ है। यदि उसमें ध्यान दें तो आप खुद मस्त हो जाएंगे।

मैं केवल ये बात कहना चाहता हूँ कि आप चाहते हैं कि आप भारी–भरकम हो जाएं, वजनदार हो जाएं, प्रतिष्ठावान हो जाएं और कीमती हो जाएं तो आपको कुर्आन से जुड़ना होगा। कुर्आन से जुड़ाव पैदा करना होगा लेकिन अल्लाह वालों से जुड़े रहने के साथ। जिसकी ओर कुर्आन में जगह–जगह ज़िक्र है। कहीं इशारे में, कहीं ताकीद, कहीं उपदेश के रूप में। दूसरी चीज़ जिसको भारी–भरकम कहा गया, उस शब्द में लोग बहुत उलझते हैं लेकिन उसका तात्पर्य ये है कि जो कुर्आन वाले हैं और आप सल्ल0 के आचरण को अपनाने वाले हैं और उसके वास्तविक अर्ह हैं तो उनकी सेवा में आप रहें, उनके आलोक से आप लाभ उठाएं तो आप भार वाले हो जाएंगे। उसमें बात ये है कि उसमें अहलेबैत के सम्बन्ध में कुछ शब्द आते हैं तो अहले बैत का तात्पर्य ये है कि जो अर्ह हो कुर्आन का, वही अहलेबैत है, जो कुर्आन के योग्य है वही हदीस के योग्य है। क्योंकि कुर्आन व हदीस एक दूसरे से जुदा नहीं हो सकते। जिस प्रकार "लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" की आस्था कि वह दोनों एक दूसरे के अंश हैं। ज़ाहिर है कि कोई अहले बैत में से है और अहले कुर्आन में से भी है तो क्या कहने। सोने पे सुहागा। और आप में यदि कोई भी ऐसा है जो कुर्आन व हदीस से सम्बन्ध रखता है और आप

**शेष पृष्ठ.....31 पर**

(उर्दू हिन्दी लिपि में)

# पहले अपनी ख़बर लीजिये

—मुफ़्ती मुहम्मद तकी उस्मानी

—अनु0: अब्दुर्रहमान खान

ज़माना बड़ा ख़राब है, अमानत और दयानत लोगों के दिल से उठ चुकी है। रिश्वत का बाजार गरम है, दफ्तरों में पैसे या सिफारिश के बगैर कोई काम नहीं होता, हर शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा बटोरने की फिक्र में है, शराफत और अख़लाक का जनाज़ा निकल गया है। बेदीनी का सैलाब चारों तरफ उमड़ा हुआ है, लोग खुदा और आखिरत से ग़ाफिल हो बैठे हैं। इस किस्म के जुमले हैं, जो हम दिन रात किसी न किसी उसलूब से कहते या सुनते रहते हैं, हमारी कोई महफिल शायद ही हालात की खराबी के इस शिकवे से खाली होती हो, और यह शिकवा कुछ गलत भी नहीं। वाकिया ये है कि ज़िन्दगी के जिस शोबे की तरफ नजर डालिये हालात बद से बदतर हैं इसी प्रकार दूसरी तरफ इस्लाहे मुआशरा की कोशिशों का जायजा लीजिये तो बजाहिर उनमें भी कोई कमी नज़र नहीं आती, न जाने कितने इदारे, कितनी जमाअतें, कितनी अन्जुमनें इसी मुआशरे की इस्लाह के लिये कायम हैं, और अपने अपने दायरे में अपनी–अपनी बिसात के मुताबिक कुछ न कुछ कर रही हैं। शायद ही मुल्क का कोई काबिले जिक्र हिस्सा इस किस्म की कोशिशों से खाली हो। लेकिन अगर बहैसियत मजमूई पूरे मुआशरे को देखा जाये तो बजाहिर यह सारी कोशिशें बेकार महसूस होती हैं। और मुआशरा की मजमूई फिजा पर न सिर्फ यह कि उनका कोई नुमायां असर जाहिर नहीं होता बल्कि उफक पर उम्मीद की कोई किरन भी नज़र नही आती। इस सूरते हाल के यूँ तो बहुत से असबाब हैं। और असबाब अब इतने उलझ गये हैं कि इस उलझी हुई डोर का सिरा पकड़ना भी आसान नहीं रहा। लेकिन इस वक्त मैं सिर्फ एक अहम सबब का तजकिरह करना चाहता हूँ, जिसकी तरफ बसाअवकात हमारा ध्यान नहीं जाता। वह सबब यह है कि हमारा इजतिमाई मिज़ाज कुछ ऐसा बन गया है कि हमें दूसरों पर तन्क़ीद करने, उनके उयूब तलाश करने और उनकी बुराइयों पर तब्सरा करने में जो लुत्फ आता है वह किसी हक़ीकी इस्लाही अमल में नहीं आता। हालात की ख़राबी का शिक्वा हमारे लिये वक़्त गुजारी का एक मशगला है। जिसके नित नये उसलूब हम ईजाद करते रहते हैं, लेकिन उन खराबियों की इस्लाह के लिये कोई बा माना क़दम उठाने को तैयार नही होते और अगर इस्लाह के लिये कोई झण्डा बुलन्द करता भी है तो हमारी ख़्वाहिश और कोशिश यह होती है कि इस्लाह के अमल का आगाज़ किसी दूसरे से हो। हमारी इस्लाही जद्दोजहद इस जहनी मफरुजे की बुनियाद पर आगे बढ़ती है कि हमारे सिवा सारी दुनिया के लोग खराब हो गये हैं और उनके आमाल व अख़लाक़ को सही करने की ज़िम्मेदारी हम पर आयद होती है। यह सब कुछ सोचते और करते हुए यह ख्याल बहुत कम लोगों को आता है कि कुछ खराबियां खुद हमार अन्दर भी हो सकती हैं। और हमें सबसे पहले उनकी इस्लाह की फिक्र करनी चाहिये, चुनाँचे जो इस्लाही तहरीक अपने आपसे बेखबर होकर सिर्फ दूसरों को अपना हदफ बनाती है, इसमें

दूसरों के लिये कोई कशिश और तासीर नहीं होती और वह महज़ एक रस्मी कारवाई होकर रह जाती है। मुआशरे के हालात और लोगों के तर्जे अमल पर तन्कीद का सबसे खतरनाक और नुकसानदेह पहलू यह है कि बाज अवकात मुआशरे में फैली हुई बुराईयों को खुद अपनी गलत कारी के लिये वजहे जवाज बना लिया जाता है, इसीलिये यह फिक्रा बकसरत सुनने में आता है कि यह काम ठीक तो नही है, लेकिन ज़माने के हालात को देखते हुए करना ही पड़ता है। इसका नतीजा यह है कि हम अपने ज़माने और ज़माने की सारी बुराईयों का तजकिरा तो इस अन्दाज़ से करते हैं कि जैसे हम उन तमाम बुराइयों से मासूम और महफूज़ हैं, लेकिन इस तजकिरे के बाद जब अमली ज़िन्दगी में पहुँचते हैं तो उन कामों का बेझिझक इरतकाब करते जाते हैं। जिनकी बुराई बयान करते हुए हमने अपना सारा ज़ोर बयान पर खर्च किया था। अगर हमारी आँखों के सामने एक हौलनाक आग भड़क रही हो, और हम यकीन से जानते हों कि अगर उसकी रोक थाम न की गई तो यह पूरे माहौल को अपनी लपेट में ले लेगी, तो क्या फिर भी हमारा तर्जे अमल यह होगा कि हम इतमिनान से बैठकर इज़हारे अफसोस करते रहें और हाथ पांव हिलाने की कोशिश न करें। ऐसे मौके पर बेवकूफ से बेवकूफ आदमी भी आग की तफसीलात को नमक मिर्च लगाकर बयान करने से पहले उसे बुझाने के लिये फायर ब्रिगेड को फोन करेगा, और खुद भी उसे बुझाने का जो तरीका मुमकिन हो इख्तियार करेगा, और आग बुझती नजर न आये तो कमजकम खुद तो वहां से भाग ही खड़ा होगा, लेकिन यह काम कोई बदतरीन दीवाना ही कर सकता है कि यह सब कुछ करने के बजाये वह आग का किस्सा लोगों को सुनाकर खुद उसी आग में छलांग लगा दे। लेकिन मुआशरती बुराइयों की जिस आग का तजकिरा हम दिन रात करते हैं अजीब बात है कि इसके बारे में हमारा तर्ज़े अमल यही है कि यह तजकिरा करने के बाद हम खुद भी उसी में कूद जाते हैं। जब मुआशरे में बुराइयों और गुमराहियों का चलन आम हो जाये तो ऐसे मौके के लिए कुर्आन ने एक बड़ी उसूली हिदायत अता फरमाई है कि तुम्हारा काम यह है कि तुम अपनी खबर लो और कमजकम अपनी जात की हद तक बदआमालियों से परहेज करो, और अपना सारा जोर खुद अपने आपको सही करने में खर्च कर दो। जिन बुराइयों से तुरन्त बच सकते हो उनसे तुरन्त बच जाओ। अगर कोई दूसरा रिश्वत ले रहा है तो कमजकम खुद रिश्वत के गुनाह से बच जाओ, अगर कोई दूसरा खयानत का मुरतकिब हो रहा है तो कमजकम खुद खयानत से इजतिनाब करो अगर कोई दूसरा झूठ बोल रहा है तो कमजकम सच्चाई को अपना शिआर बना लो अगर कोई दूसरा हराम खोरी में मुब्तला है तो कमजकम तुम यह तय कर लो कि हराम का कोई लुकमा मेरे पेट में नहीं जायेगा। मतलब यह है कि ऐसे मौके पर आम लोगों की बुराई करते रहना मसले का हल नहीं, मसले का हल यह है कि हर आदमी अपनी इस्लाह की फिक्र करे और अपने आपको इन फैली हुई बुराईयों से बचाने के लिये अपनी सारी तवानाइयों को खर्च कर दे। यानि जो आदमी इस वक्त दूसरों की बुराईयों का राग अलापता रहता है और खुद अपने अयूब की परवाह न करे, वह सबसे

ज़ियादा तबाह हाल है, इसके बजाय अगर वह अपनी इस्लाह की फिक्र कर ले और अपने तर्जे अमल का जायजा लेकर अपनी बुराईयां दूर कर ले तो कमजकम मुआशरे से एक फर्द की बुराई खत्म हो जायेगी, और तजुर्बा यह है कि मुआशरे में एक चिराग से दूसरा चिराग जलता है। और एक फर्द की इस्लाह किसी दूसरे की इस्लाह का भी जरिया बन जाती है। मुआशरा दर हक़ीकत अफराद ही के मजमूए से इबारत है, और अगर अफराद में अपनी इस्लाह की फिक्र आम हो जाये तो धीरे–धीरे पूरा मुआशरा भी संवर सकता है। इसलिये मसले का हल यह नही है कि हम मुआशरे और उसकी बुराइयों को हर वक्त कोसते ही रहें, इससे न सिर्फ यह कि कोई मुफीद नतीजा बर आमद नहीं होता, बल्कि बसावकात लोगों में मायूसी फैलती है और बद अमली को फरोग़ मिलता है, इसके बजाय मसले का हल कुर्आन व सुन्नत के मजकूरा बाला इरशादात की रोशनी में यह है कि हम में से हर मनुष्य अपने हालात का जायजा ले और अपने गरेबान में मुँह डालने की आदत डाल कर यह देखे कि उसके जिम्मे अल्लाह और उसके बन्दों के क्या–क्या हुकूक व फरायज़ हैं। और क्या वह वाकियतन उन हुकूक व फरायज को ठीक–ठीक अदा कर रहा है।

मुआशरे की जिन बुराइयों का शिक्वा उसकी ज़बान पर है, उनमें से किन–किन बुराइयों में वह खुद हिस्सेदार है। हमने तो कभी इस नुकत–ए–नज़र से अपना जायजा लेने की कोशिश ही नहीं की। इसलिये यह इजमाली बहाना हम दिन रात पेश करते रहते हैं कि चहुँओर फैली हुई बदउनवानियों में एक अकेला आदमी क्या कर सकता है। हालांकि अगर इन्साफ के साथ इस तरह जायजा लेकर देखें तो पता चले कि उन गये गुज़रे हालात में भी एक अकेला आदमी बहुत कुछ कर सकता है। जायजा लेने से मालूम होगा कि हमारी बहुत सी गलतियाँ और कोताहियाँ ऐसी हैं जिन का हम फौरी तौर पर तदारुक कर सकते हैं और कोई नहीं है जो इस तदारुक के रास्ते में रुकावट बन सके, और गलतियां ऐसी हैं जिनका फौरी तदारुक मुमकिन नहीं है तो कमजकम उनकी मिक़दार और संगीनी में फौरी तौर से कमी की जा सकती है, और बहुत सी गलतियां ऐसी भी हैं जिनकी तलाफी और तदारुक में कुछ दुश्वारियां हैं लेकिन वह दुश्वारियां ऐसी नहीं हैं जो हल न हो सकें, इन दुश्वारियों को दूर करने की राहें सोची जा सकती हैं। जिस दिन जमीर की यह ताकत बेदार हो गई और उसकी आवाज सुनने के लिये दिल व दिमाग़ खुल गये उस दिन सही माने में उस हकीकत का अन्दाज़ा होगा कि मुआशरे की खराबी का जो हौवा हम ने अपने सरों पर मुसल्लत कर रखा था, और जिसने हमे अपने सुधार की हर तदबीर से रोका हुआ था, वह कितना हकीकत और कितना बेवज़न था। बीमार का सबसे पहला मसला यह है कि इसे अपनी बीमारी का एहसास हो और इस बात का यकीन उसके दिल में पैदा हो कि उसकी बीमारी ला इलाज नहीं है। आज हमारा सबसे बड़ा मसला यही है कि हम इस एहसास और इस यकीन से लैस हो कर अपनी बीमारी का इलाज तलाश करने की फिक्र करें।

❖❖❖

# कादियानियत के गढ़ में इस्लाम पसंदों की यलगार

अकीद–ए–खत्मे नबुव्वत सल्ल0 की हिफाजत के लिए काम कर रही भारत की प्रसिद्ध जमाअत मजलिसे अहरार इस्लाम हिन्द के लीडरों ने फितना–ए–कादियानियत पर जबरदस्त लगाम कसते हुए एक ऐतिहासिक कारनामा अंजाम दिया। बंटवारे के बाद एक बार फिर खास कर कस्बा कादियान के आस पास में अहरार लीडरों का जाना शुरु हुआ है। मिली जानकारी के अनुसार खुशी की बात यह है कि कादियानियत के केन्द्रीय स्थान को उन्हीं के इलाकों में कमजोर करते हुए मजलिसे अहरार इस्लाम हिन्द ने कादियान से सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित गांव सूच में मस्जिद बना दी है। ये मस्जिद अहरार के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पंजाब के शाही इमाम मौलाना हबीबुर्रहमान सानी लुधियानवी की अगुवाई में बनाई गई है। इस नई मस्जिद का उद्घाटन जल्द किया जाएगा। अहरार के राष्ट्रीय महासचिव व पंजाब वक्फ बोर्ड आर0ऐ0सी0 के चेयरमैन मुहम्मद उस्मान रहमानी लुधियानवी ने हल्के के अहरारी नेताओं की ओर से आयोजित एक विशेष समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे लिए अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने का मौका है कि आज एक बार फिर कादियानियत के किले को कमज़ोर करने के लिए कादियानियों के खित्ते में पहुँच गए हैं। उन्होंने कहा कि कादियानी झूठे अंग्रेज़ी नबी मिर्जा गुलाम कादियानी के फित्ने को भारत में और फैलाना चाहते हैं लेकिन यह अल्लाह का करम है कि आज उनके केन्द्र के आसपास जो मुसलमान मौजूद हैं वह न सिर्फ इस फित्ने से परिचित हो चुके हैं बल्कि फित्ना–ए–कादियानियत का जम कर कर विरोध कर रहे हैं। मुहम्मद उस्मान रहमानी ने कहा कि मुझे अल्लाह तआला की जात से उम्मीद है कि वह दिन दूर नहीं जब अहरारी एक बार फिर कादियान में एक बहुत बड़ी खत्मे नुबूव्वत सल्ल0 कान्फ्रेन्स करेंगे। उन्होंने कहा कि पंजाब के आम देहाती मुसलमानों में अकीद–ए– खत्मे नबुव्वत सल्ल0 की हिफाजत को लेकर जोश पाया जा रहा है। उस्मान रहमानी ने कहा कि अल्लाह तआला का यह फैसला है कि हज़रत मुहम्मद साहब सल्ल0 आखरी नबी हैं, अब कयामत तक कोई और नबी नहीं आ सकता है। उन्होंने कहा कि मजलिसे अहरार इस्लाम हिन्द के कार्यकर्ताओं ने हर दौर में अकीद–ए–खत्मे नबुव्वत सल्ल0 की हिफाजत के लिए कुर्बानियां दी हैं। अहरार के बुजुर्ग रइसुल अहरार हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान लुधियानवी रह0, सय्यद अताउल्लाह शाह बुखारी रह0 जैसे लीडरों ने इस आंदोलन को कामयाब करने के लिए अंग्रेज़ों की जेलें काटी और जुल्म व सितम का मुकाबला किया।

वर्णन योग्य है कि अंग्रेज़ के दौर में मिर्जा गुलाम कादियानी नामी एक व्यक्ति ने नउजुबिल्लाह झूठी नुबूव्वत का दावा कर दिया था, जिसके बाद दुनिया भर के उलमाए कराम ने उलमाए लुधियाना के फतवा–ए–तकफीर की हिमायत करते हुए उसे मुर्तद करार दिया था। फितन–ए–कादियानियत से भारत में आम मुसलमानों को सुरक्षित करने के लिए अवामी तहरीक की शुरुआत मजलिसे अहरार इस्लाम ने 1929 ई0 में की थी। उस समय इस जमाअत की अगुवाई हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साहब रायपुरी रह0 और हज़रत मौलाना अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह0 ने की थी। अहरार के संस्थापक मौलाना हबीबुर्रहमान लुधियानवी अव्वल रह0 ने फित्न–ए–कादियानियत पर नकेल डालते हुए खास कादियान में शोब–ए–

तहफ्फुज़ खत्मे नबूव्वत सल्ल0 का दफ्तर स्थापित किया था। आजादी के बाद उजड़ चुके पंजाब में कादियानियत ने फन फैलाने की कोशिश की जिसे एक बार फिर अहरारी मुंह तोड़ जवाब दे रहे हैं। अहरार दफ्तर से जारी प्रेस रिलीज के अनुसार कादियान के नजदीक बनाई गई मस्जिद का उद्घाटन अहरार के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना हबीबुर्रहमान सानी लुधियानवी करेंगे ओर इस मौके पर एक बहुत बड़े जल्से का आयोजन किया जाएगा, जिसमें बड़ी संख्या में मुसलमान हिस्सा लेंगे। कस्बा कादियान के क़रीब बनाई गई मस्जिद के अध्यक्ष नेअमत अली, सचिव डॉक्टर मुहम्मद अमरीक ने बताया कि अहरार की ओर से इस इलाके में मस्जिद बनाने से मुसलमानों को बड़ा हौसला मिला है। दूसरे राज्यों से आए हुए मजदूर तबके के मुसलमान गलत फहमी में कई बार मजबूरी में ईद की नमाज़ अदा करने के लिए कादियान चले जाते थे। उन्होंने बताया कि अल्लाह का शुक्र हे कि अब अहरार की कोशिशों से इस इलाके में मुसलमानों में बड़ी हद तक जागरूकता आ गई है। कादियानियों की ओर से अपने सालाना जलसे में बुलाने के लिए दिये जा रहे लालच के हथकंडे भी बेकार साबित हो रहे हैं। ❑❑

**स्वयं को पहचानिए.....**

(सल्ल0) के आचरण से उसका जुड़ाव है तो वह उसका अर्ह है। क्योंकि मात्र किसी बड़े बाप के बेटे हो जाने से बात नहीं बनेगी। इसीलिए कुर्आन में है कि जब हज़रत नूह अ0 ने अपने बेटे के लिए सिफारिश की तो कहा गया कि "उसका कर्म अच्छा नहीं है" इससे मालूम हो गया कि यदि औलाद सदाचारी है तो योग्य है, सदाचारी नहीं तो अयोग्य है। इसीलिए हज़रत इब्राहीम अ0 ने जब अल्लाह से दुआ की थी तो अल्लाह ने कहा था कि "मैं अवश्य तुमको लोगों का पथ प्रदर्शक बनाऊँगा"। तो इसपर हज़रत इब्राहीम अ0 ने कहा कि "मेरी औलाद को भी पद मिलेगा" तो अल्लाह ने कहा कि "मेरा वचन अत्याचारियों तक नहीं पहुँचता"। तुम्हारी औलाद में जो योग्य होगा उसको मिलता चला जाएगा। हज़रत इस्हाक़ अ0 की औलाद को मिलता रहा और सिलसिला चलता रहा। जब उन्होंने अयोग्यता का अन्तिम प्रमाण दिया तब हज़रत इस्माईल अ0 की औलाद में बागडोर आ गई।

अतः अब जो योग्य हैं उनको खोजने की आवश्यकता है ताकि सब उससे लाभ उठा सकें, क्योंकि एक बात याद रखें कि अल्लाह की किताब को यदि आप समझना चाहते हैं तो पहले अरबी भाषा जानें। उसके व्याकरण आदि जानें, उसके बाद अल्लाह वालों की आवश्यकता है या यूँ कह लीजिए कि अल्लाह की किताब के लिए, रसूल की सुन्नत के लिए अल्लाह वालों की आवश्यकता है। और अल्लाह वालों को जाँचने–परखने के लिए अल्लाह की किताब और आप (सल्ल0) की सुन्नत की ज़रूरत है। ये भी नहीं कि जो अल्लाह वाला होने का दावा करे कि मैं उसके योग्य हूँ। दावों से शोहरत और प्रोपेगंडों से कुछ नहीं होता। उनकी जाँच–परख के लिए दो आइने मौजूद हैं, कुर्आन और हदीस। उसमें देख लिया जाए, बस यदि उसके अनुसार है तो वह आदमी योग्य, अन्यथा अयोग्य। वह चाहे कैसा ही चमत्कार दिखाने वाला हो और न जाने क्या कुछ करने वाला हो, लेकिन है कुछ भी नहीं। उसकी कोई हैसियत नहीं। और कुछ चिन्ह (अलामत) कुर्आन में दर्शाए गए हैं, उसको आप पढ़ेंगे तो आपको मालूम हो जाएगा। बताने का उद्देश्य ये है कि यदि आप वजन वाले बनना चाहते हैं तो आपको तमाम चीज़ों के बारे में थोड़ा सा सोचना पड़ेगा क्योंकि असल चीज़े ख़त्म होती चली जा रही हैं। ❑❑

# मानवता का सन्देश

—इदारा

ईश्वर को धन्यवाद है कि हम मानव हैं, इस धरती पर अनगिनत सृष्टियाँ हैं। उनमें मानव अथवा मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। इसलिये कि इसको उन्नति प्रदान करने वाली, उन्नतिशील बुद्धि मिली है। बुद्धि तो सभी जीव धारियों को मिली है, परन्तु उनकी बुद्धि केवल उनकी आवश्यकताओं के पूरा करने में सहायक है। चारा मिला, खा लेंगे, पानी मिला, पी लेंगे नहीं मिला और बंधे नहीं हैं खुले हैं तो चल फिर कर ढूँढेगें जहाँ मिलेगा खा–पी लेंगे। उनकी बुद्धि इस प्रकार की नहीं है कि लहलहाते गेहूँ के खेत और उसी के निकट हरी भरी घास में अंतर कर सके, जो सामने आया उसमें मुँह मार देंगे, गड्ढे में गन्दा पानी भरा है, नाँद में साफ पानी भरा है इसमें वह अंतर नहीं कर सकते, जो आगे आया उसमें पी लेंगे। मारोगे तो इतनी बुद्धि है कि मार से भागेंगे लेकिन यह समझ कदापि नहीं है कि क्यों मारे गये, ऐसा काम न करें कि न मारे जाएं। चोट पर, दुख पर उनको रोना नहीं सिखाया गया, खुशी पर उनको हंसना नहीं सिखाया गया, वह बीमार हों, कोई रोग लग जाए, आप उनको पशु चिकित्सा वाले अस्पताल ले जाएं, दवा खिलाएं अच्छे हो जाएं, फिर बीमार पड़ें, आप उनको खोल दें और कान में कह दें कि अस्पताल चले जाओ, वह न जाएंगे इसलिये कि इतनी समझ वाली बुद्धि नहीं रखते। सत्य यह है कि वह चलते फिरते वनस्पति हैं। परन्तु मानवजाति को ऐसी बुद्धि मिली है कि उसकी बुद्धि की समीक्षा सरल नहीं। उसकी बड़ी विशेषता तो यह है कि इसकी बुद्धि उन्नति देने वाली है। निःसन्देह चींटी जिस प्रकार अपना घर बनाती है, मनुष्य के बस की बात नहीं, परन्तु वह सदियों पहले जैसा अपना घर बनाती थी, आज भी उसी प्रकार बनाती है तनिक भी अन्तर न कर सकी, यह सत्य है कि उनको जो स्थिर बुद्धि दी गई है वह आश्चर्य जनक है। गौरय्या का घोंसला, मधुमक्खी का छत्ता, उसमें मधु का एकत्र करना, मच्छरों और खटमलों के खून चूसने की विधि, दीमकों का लकड़ी खाकर मिट्टी में बदल देना, केचुओं का मिट्टी खाकर नीचे से ऊपर कर देना, पखेरुओं का हवा में उड़ना, मछलियों का पानी में तैरना, उसी में रहना और पानी से ऑक्सीजन लेना आदि, यह वह आश्चर्यजनक कार्य हैं जो वह अपनी स्थिर बुद्धि से भली भांति करते हैं, परन्तु उनके इन कार्यों में लेश मात्र उन्नति न हुई न हो सकेगी, इसलिये कि उनकी बुद्धि स्थिर है।

इसके सम्मुख मानव बुद्धि मनुष्य को एक दशा में ठहरने ही नहीं देती, कभी यही मानव पहाड़ की खोहों में रहता था, जंगल के फल फलारी खाता था, पत्थर, लकड़ी, हड्डी के यंत्रों से चीड़ फाड़ कर कच्चा माँस खा जाता था। कहीं जाना होता तो पैदल चलकर जाता, कोई सीमा है उसकी उन्नति की? एक–एक करके गिनाओ तो प्रातः से संध्या तथा सांझ से भोर हो जाए और बात अधूरी रह जाए, आज मनुष्य मोटर साईकिल पर चलता है, कार पर चलता है, रेल गाड़ी पर सोते हुए भागता है, आकाश में विमान द्वारा उड़ता है। रास्ता चलते अमरीका, लन्दन, अरब, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका से बातें करता है, कच्चा मांस नहीं बिरयानी, पुलाव, बाक़र ख़ानी, शीरमाल, पराठा, कबाब, हलवा पूड़ी कितनी स्वादिष्ट मिठाइयाँ, कितने स्वादिष्ट नमकीन बनाता और खाता है।

अब वह नंगा नहीं रहता, न अपनी प्राकृतिक लज्जा से पत्तों

और खाल से लज्जा अंग, छुपाता है। कोई सीमा है उसके प्रगति की, कोई गिन्ती है उसके वस्त्रों के प्रकारों की? हम बूढ़े तो उनके नाम भी नहीं ले पाते, गिन्ना तो दूर की बात है। अब वह खोहों में नहीं रहता, खोहों से निकलकर उसने न जाने कितने प्रकार के घर बनाए, तनिक उन भवनों पर एक दृष्टि तो डालें, कितने प्रकार के भवन, कितनी बनावटों के फ्लैट, एयर कन्डीशन, विद्युत से जगमग, अब कुएं, नदी तालाब से पानी नहीं लाना है, टोंटी खोलें, पानी पाएं, जाड़ों में गर्म पानी लें, गर्मियों में ठण्डा पानी लें, यह सब मानव की उन्नतिशील बुद्धि का चमत्कार है।

हमारे बाघ और चीते जिनकी बुद्धि सीमित तथा स्थिर है, वह तो केवल अपने मतलब के लिये आप्रेशन करना जानते हैं, चीरा, फाड़ा, खाया चल दिये, उनकी यह चीर–फाड़ मानव की चीर–फाड़ से पहले की है, कारण यह कि उनका जीवन ही इसी चीर–फाड़ पर निर्भर है परन्तु आज तक वह दूसरों के लाभ के लिये कोई आप्रेशन न कर सके, आखिर मनुष्य भी तो आरम्भ में इसी प्रकार चीर–फाड़ करता था परन्तु उसकी उन्नतिशील बुद्धि ने उसको कहाँ पहुंचा दिया, आँख, नाक कान, मस्तिष्क, हृदय, फेफड़े, पित की थैली, गुर्दे, शरीर का कौन सा अंग है जिसका सफल आप्रेशन नहीं होता, कितने खराब अंग निकाल कर दूसरे से लेकर लगा दिये जाते हैं, दाँत और कई स्थानों की हड्डियाँ बनाकर लगा दी जाती हैं।

यही मनुष्य जो पहले खोहों में रहता था वह अब भव्य भवनों में मिल जुलकर रहने लगा। गांव बसे, टाउन बने, नगर बसे, पहले जिन लोगों ने कुछ गांवों तथा नगरों पर राज किया वह राजा कहलाए, उन्नति होती रही रहन, सहन के विधान बने, व्यक्तित्व राज्य समाप्त हुए, जनतंत्र आया जहाँ के लोगों ने वैधानिक नियमों को अपनाया वहाँ शान्ति रही, जहाँ वैधानिक नियमों का उल्लंघन हुआ वहाँ जीवन में कठिनाइयाँ आईं। निःसन्देह विधान में इन समस्याओं के समाधान का प्रावधान है, कारागार है, आर्थिक दण्ड है, परन्तु जब पापों का प्रचलन हो गया तो दण्ड से बचने के लिये छुपकर पाप होने लगे ऐसे में विधान फेल होता दिखा। क्या आप ने कभी सोचा कि फिर इस जटिल समस्या का समाधान कैसे हो?।

इस समस्या का समाधान तभी सम्भव है जब मन में यह बात बैठी हो कि कोई दृष्टि ऐसी भी है जो हमारी हर दशा को देखती है, हम सात कोठरियों के भीतर, रात की अंधेरियों में कोई भी कार्य करें, भला या बुरा, उस दृष्टि से छुप नहीं सकते, वह दृष्टि है सृष्टि कर्ता की, जिसे कोई अल्लाह कहता है, कोई ईश्वर कहता है, कोई खुदा कहता है, कोई गॉड कहता है। यहाँ प्रश्न उठता है कि उस ईश्वर को समझने, उससे परिचित होने और उसको पा लेने का साधन क्या है?।

सत्य यह है कि हमारी उन्नतिशील बुद्धि इतना मानने पर तो विवश है कि इस संसार का कोई विधाता अवश्य है। जब एक पेन्सिल, एक पेन, एक कप, एक घड़ी बिना बनाए नहीं बन सकती तो यह सूर्य जो सारे जगत को प्रकाश तथा ताप देता है और उसके उदय तथा अस्त के नियम में कभी भी अंतर नहीं होता, स्वतः कैसे बन सकता है, यह धरती, यह आकाश, यह गगन मंडल, यह अनेक प्रकार की सृष्टि आप ही आप कैसे अस्तित्व में आ सकती है? कोई अपार शक्ति अवश्य इन सबको रचने वाली है।

आप ध्यान दीजिये, साइंस में हम इतने आगे जा चुके हैं कि खून, थूक, खखार, मल, मूत्र का एक एक अंश हमारा पैथालोजिस्ट स्पष्ट करके बताता है, अल्ट्रासाउन्ड, एक्सरे आदि क्या–क्या बता देते हैं, परन्तु नहीं बता पाते तो प्राणों के विषय में कुछ भी नहीं बता पाते कि यह कहाँ से आते हैं

कहाँ चले जाते हैं, कोई मशीन आज तक यह भेद न खोल सकी।

यदि ईश्वर पथप्रदर्शन न करता तो यह बुद्धि सर पटक के मर जाती और कुछ भी समझ न पाती।

हाँ हाँ मनुष्य टेक्नालोजी में बहुत आगे जा चुका है और बराबर चला जा रहा है साइंस बहुत आगे जा चुकी है और चली जा रही है। विमानों का आविष्कार ही क्या कम था कि अब उसकी गति तथा उसके वेग की कोई सीमा नही है। कैसे कैसे यंत्र रॉकेट, एटम बम, हाइड्रोजन बम और पता नहीं कौन–कौन से बम। चन्द्रमा में रॉकेट द्वारा मनुष्य पहुंच कर लौट भी आया अब अपोलो की तैयारी है। रॉकेट छोड़ा जा चुका है जो एक सेकण्ड में 16 किलो मीटर की गति से जा रहा है 16 जनवरी 2006 में छोड़ा हुआ रॉकेट इस वेग से चल कर साढ़े नौ वर्षों के पश्चात 14 जुलाई 2015 ई0 अपोलो पर उतरेगा। इन उन्नतों को उन्नति नहीं चमत्कार ही कहना चाहिए, परन्तु जरा इन चमत्कारियों से पूछिये और स्वयं सोचिये कि, अण्डे से मुर्गी निकलती है और मुर्गी से अण्डा, इनमें पहले कौन पैदा हुआ और कैसे? इसी प्रकार सोच डालिये पुरुष पहले पैदा हुआ था या स्त्री और कैसे? पेड़ पहले पैदा हुआ या उसका बीज और कैसे? सत्य यह है कि किसी के पास भी उचित उत्तर नहीं है। इस का उत्तर है तो उसी के पास जिसको उसके पैदा करने वाले ने स्वयं सुझाया।

यह जो आप हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, सिख धर्म, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म देख रहे हैं यह किसी की बुद्धि से नहीं बने हैं। यद्यपि मुझे इस्लाम के अतिरिक्त किसी धर्म का भरपूर ज्ञान नहीं है परन्तु कई धर्मों के मौलिक तत्वों का अध्ययन किया है और उसके आधार पर कह सकता हूँ कि हर धर्म वाले का यही कहना है कि हमारा धर्म, ईश धर्म और हमारा धार्मिक ग्रन्थ ईशवाणी है। और इस कथन को झुटलाने के लिये हमारे पास कोई उचित तर्क भी नहीं है। बस एक बात खटकती है कि जब सब एक मालिक, एक विधाता, एक निर्माता मानते हैं तो यदि सभी धर्म उसी के हैं तो इन सब में मतभेद क्यों है? इतना मतभेद कि एक दूसरे का विलोम, यहां यह बात तो स्पष्ट है कि इसका कारण मानवी हस्तक्षेप है, परन्तु इस झगड़े में पड़ना हमारे मिशन के विरोध में है। ऐसी स्थिति में जब हमको एक साथ रहना है और हमारे धर्मों में प्रतिकूलता है तो हमरा कर्तव्य क्या बनता है? हम को चाहिये कि जिन धार्मिक विश्वासों अथवा कर्मों में प्रतिकूलता है, विभिन्नता है, उनको हम जिसके धर्म में जो है उसको उस धर्म वाले के लिये छोड़ दें और सम्मिलित सभाओं में उसको कभी वाद–विवाद में न लाएं, परन्तु ईश्वर से यह प्रार्थना अवश्य करते रहें कि हे जगत के निर्माता! हे हमारे स्वामी! हम को सत्य मार्ग दिखाकर उसको ग्रहण करने की शक्ति दे, तथा कुमार्ग दर्शाकर उससे बचने की शक्ति दे। मानवता का सन्देश सम्बन्धित गोष्ठी के मंच पर हम केवल उन बातों की ओर लोगों को बुलाएं जो सभी धर्मों में पाई जाती हैं और जो सामाजिक जीवन की शान्ति के लिए अनिवार्य भी है और पर्याप्त भी, उसमें सर्वप्रथम है ईश्वर को उसकी शक्तियों अर्थात गुणों के साथ मानना, यह मानना कि न तो उससे कुछ छुप सकता है, न कोई पापी उसकी पकड़ से बच सकता है। यदि यह मुख्य बात मनुष्य के मन में विद्यमान रहे तो समाज के सुधरने में देर न लगे, फिर तो संसार से अत्याचार विदा हो जाए परन्तु यह बात हर मन में पैदा होना सरल नहीं है और यदि मनुष्य चाहे तो बहुत सरल भी है। हर मनुष्य को चाहिये कि वह किसी धर्म गुरु से यह बात सीखे। मानव जाति के लिये यह तत्व अति आवश्यक है और

मानवता का यह वह सन्देश है जिसे कोई भी धर्म वाला नकार नहीं सकता है।

रहीम कहते हैं:

अमर बेल बिन मूल की प्रति पालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहि तज खोजत फिरये काहि।।

उस ईश्वर ने तो ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि बिना मूल अर्थात बिना जड़ की अमर बेल को भी उसकी जीविका पहुंचा कर उसे जीवित रखता है उसे छोड़कर किसे ढूंढते फिरते हो। अरे वह तो कुसवारी के बन्द कीड़े को भी जीवित रखता है और व्हेल मछलियों और हाथियों के पेट भी भरता है। उस शक्ति को मान कर उस पर पूरा भरोसा रखें। कबीर कहते हैं:–

जा को राखे साइयां मार सकै न कोए।
बाल न बांका कर सकै जो जग बैरी होए।।

तो पहली बात तो यह हुई कि ईश्वर पर विश्वास हो, मन में उसके प्रति प्रेम हो, धर्म गुरुओं से इस सत्य ज्ञान को प्राप्त करे और हर दशा में उसका ध्यान रहे।

दूसरी बात यह है कि उसकी सृष्टि से प्रेम हो, मनुष्य के मन में दूसरे मनुष्य के लिये सहानुभूति हो, मनुष्य ही नहीं अपितु हर जीवधारी के लिये सहानुभूति हो, यह शिक्षा भी हर धर्म में पाई जाती है, अतः मानवता के सन्देश में इसको जोड़ना अनिवार्य है।

यदि समाज में सहानुभूति का वातावरण उत्पन्न हो जाए तो समाज शान्तिमय हो जाए।

तीसरी बात जो हर धर्म में अभीष्ट है और जो मानवता का महत्वपूर्ण सन्देश है, वह कर्तव्य प्रायणता है, आज मानव जाति में इसकी बड़ी कमी दिखाई पड़ती है। समाज में यह अशान्ति इसी कर्तव्य प्रायणता के अभाव के कारण है। यदि हर अधिकारी, हर कर्मचारी अपने कर्तव्य का पालन करे, हर व्यापारी, हर किसान अपने कर्तव्य का पालन करे, वैद्य, डॉक्टर, हकीम, इन्जीनियर, ठेकेदार, पुलिस, दारोगा के विषय में तनिक सोचिये तो कहाँ–कहाँ पानी मर रहा है और लोगों की कोताहियों से समाज कितना प्रभावित हो चुका है, यदि हर मनुष्य अपने कर्तव्य का पालन करे तो समाज कितना शान्तिमय हो जाए।

यह तीन बातें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, ईशज्ञान और उसका ध्यान, सहानुभूति, और कर्तव्य प्रायणता, इसके पश्चात बहुत सी ऐसी बातें हैं जो एक अच्छे समाज के लिये आवश्यक हैं और जो हर धर्म की शिक्षाओं में विद्यमान हैं जैसे:

सत्य को अपनाना और असत्य को त्यागना, कबीर कहते हैं:–

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप
जाके मन में सांच है, ताके मन में आप

चोरी, डकैती, कत्ल, आतंक, व्यभिचार, जुआ, शराब, छल–कपट, धोखा, किसी की आबरु लेना आदि जितने भी काम दूसरों को धोखा देने वाले हैं, अपने भाईयों को कष्ट देने वाले हैं, सभी धर्मों में उन से रोका गया है। अतः मानवता का यह सन्देश है कि हम मानव जाति को जो भी सुख पहुंचा सकते हैं उसमें कोताही न करें और हम किसी मानव को अपितु किसी जीवधारी को अकारण दुख न पहुँचाएं, परन्तु मानव सर्वश्रेष्ठ है। अतः जो जीव–जन्तु मानव को कष्ट देने वाले हैं जैसे मक्खी, मच्छर, खटमल, चूहे आदि या जो मनुष्य के प्राण ही ले लेते हैं या बहुत दुख देते हैं जैसे बिच्छू, सर्प, तथा हिंसक पशु आदि इनसे बचाव करना, आवश्यकता पर इनको मारना उचित होगा। इसी प्रकार मानव सर्वश्रेष्ठ है। जिस धर्म में माँस, मछली आदि खाने की आज्ञा है उसको हम मानवता के सन्देश में विवाद का विषय न बनाएंगे।

मानवता का सन्देश है मानव को सुख पहुंचाना और उसे दुख से बचाना और यह जब ही हो सकता है जब मानव के बनाने वाले ईश्वर में विश्वास हो, उसकी पकड़ का भय हो, उसके पुरस्कारों पर विश्वास हो और उससे प्रेम हो।

❑❑

# एक नज़र ईसाईयों के खूनी इतिहास पर

–मौलाना सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान
अनु0– नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

**मुसलमानों के इतिहास को कलंकित करने वाले ईसाई इस आइने में अपनी तस्वीर भी देख लें–**

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्यूदय काल को गुज़रे सवा चौदह सौ साल हो चुके हैं। इस दौरान ईसाई प्रचारकों, इतिहासकारों और प्राच्य विधाविशारदों (मुस्तश्रेक़ीन) ने ये दिखाने के पूरे प्रयास किये हैं कि मुसलमानों का इतिहास नृशनता, बर्बरता और खूंरेज़ियों से ऐसा भरा हुआ है कि ये कसाई की दुकान नज़र आता है।

**उनकी गुफ़्तुगु के अन्दाज़ मुजरिमाना–**

ईसाई मुसलमानों के विरुद्ध ये आक्रामक रूप धारण करके अपने कलंकित इतिहास का बचाव करते हैं। क्योंकि वास्तव में उन्हीं का इतिहास शुरु से ही वधशाला बना रहा। यूरोप के शासक चार्ल्स की विजयी यात्रा की बड़ी धूम है। उसने सेक्सन, इवार्ड, बमबार्ड, मध्य यूरोप के जर्मन कबीलों और उत्तरी इटली को अपने अधीन करके एक बड़ा साम्राज्य स्थापित किया था। जब सेक्सन उसके विरुद्ध उठे तो एक दिन में ही साढ़े चार हज़ार सेक्सन वासियों को मौत को घाट उतार दिया। उत्तरी सेक्सन ओर नारवलनजन को तबाह व बर्बाद करा दिया। वहाँ भी महिलाओं और बच्चों को घसीट कर उनके घरों से निकलवाया और उनको निर्वासित किया। उसका विवरण कैम्ब्रिज मिडयूल हिस्ट्री पार्ट–2 में पढ़ा जा सकता है। विलियम प्रथम ने 1066 ई0 में इंग्लैण्ड को फतह किया तो उसके आदेश से विजयी क्षेत्रों के घर, खलिहान और खेत आदि सब कुछ जला दिये गए। एक लाख से अधिक पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की हत्या कराई। लिनगार्ड ने "तारीख–ए–इंग्लिस्तान" के भाग दो में लिखा है कि यार्क और डरहम के क्षेत्र इस प्रकार तबाह कर दिये गए थे कि नौ साल तक वहां की ज़मीन खेती के योग्य नहीं रही। एडम ने अपनी पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ इंग्लैण्ड भाग दो में लिखा है कि उस ज़माने में विजेता पराजित के साथ किसी किस्म की रिआयत नहीं करते थे।

सेन्ट बर्थालोमियो एक प्रसिद्ध कैथोलिक संत गुज़रा है। उसका मेला प्रत्येक वर्ष 24 अगस्त को लगा करता है। 1572 ई0 में उस मेले में रात को फ्रांस के शासक चार्ल्स नोवां के आदेश से देश के सभी प्रोस्टेन्ट मौत के घाट उतार दिये गए। केवल पेरिस में 500 सम्मानित और दस हज़ार आम जनता की संख्या थी। ये कत्ल–ए–आम इतिहास की वड़ी हृदयविदारक घटना मानी जाती है।

सत्तरहवीं सदी में जर्मनी में प्रोस्टेन्ट और कैथोलिक समुदायों में जंग शुरु हुई जो यूरोप के तीस वर्षीय युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। यूरोप की बहुत सी हुकूमतें उसमें उलझ कर रह गई थीं। इतिहासकारों का बयान है कि उस लड़ाई में बोहमिया के 35 हज़ार गाँव में से केवल 6 हज़ार शेष रह गए थे। बुवेरबा, फ्रेंकोनिया और सवाबिया में ऐसी लूटमार मचाई गई कि ये समस्त क्षेत्र भुखमरी और बीमारी से तबाह

होकर वीरान हो गए। जर्मनी में एक करोड़ साठ लाख की आबादी थी। इस जंग के बाद सिर्फ साठ लाख ही रह गई। स्पेनियों ने मैक्सिको और पेरु पहुंचकर जो अत्याचार किये उसका भयावह विविरण प्रेस कोर्ट के इतिहास में पढा जा सकता है। उनके हाथों में बाइबिल होती थी, उनके साथ पादरी होते थे, और वह धर्म के नाम पर उन समस्त नृशनता की रचना करते जो उनका दिमाग सोच सकता था। डच रिपब्लिक के लेखक मोटले ने लिखा है कि 1658 ई0 में पोप के आदेश से नीदरलैण्ड के 30 लाख निवासी सूली पर चढ़ाए गए।

1914 ई0 के विश्वयुद्ध में क्या कुछ नहीं हुआ। प्रसिद्ध इतिहासकार एच0जी0 वेल्स ने लिखा है कि इस सवा चार साल की जंग में एक करोड़ आदमी युद्धक्षेत्र में मारे गए। दो–ढाई करोड़ विभिन्न प्रकार के संकटों से घिरे और अच्छे आहार से वंचित रहे। दूसरे विश्वयुद्ध में भी उतनी ही मौतें हुईं और उस प्रकार की विपत्तियों का सामना रहा। ईसाईयों के अत्याचार की पराकाष्ठा उस समय देखने में आई जब उन्होंने हिरोशिमा पर परमाणु बम गिरा कर लाखों पुरुषों, महिलाओं, बच्चों और बूढ़ों को इस प्रकार मौत के घाट उतार दिया कि चंगेज़ और हलाकू की बर्बरता को भुला दिया गया।

वियतनाम में अमेरिका के ईसाईयों ने तीस साल तक जंग की। लंदन के अख़बार "टाइम्स" का बयान है कि उस मुद्दत में अमेरीकी वायूयानों ने 18,99,660 हमले किये। 67,27,084 टन बम गिराए। वहां की वनस्पतियों को तबाह करने के लिए एक करोड़ 90 लाख गेलन का विनाशकारी पदार्थ फेंका। 315 लाख एकड़ ज़मीन पर ज़हरीली दवाएं छिड़कीं। जिनका कुप्रभाव एक सदी तक रहेगा। एक करोड़ लोग बेघर हुए। नब्बे लाख बच्चे अनाथ और पन्द्रह लाख साठ हज़ार नागरिक घायल तथा 36 लाख 62 हज़ार लोग मारे गए।

ईसाईयों ने मुसलमानों के साथ बर्बरियत का जो नंगा नाच खेला उस पर एक नज़र डालने की ज़रूरत है। वह अफ्रीका, एशिया और विश्व के किसी भी क्षेत्र में जाकर अपने साम्राज्य का विस्तार करें तो उसको अपना अधिकार करार देते हैं। मगर यूरोप में मुसलमानों ने किसी इलाके में अपना कदम जमाया वह उन्हें कभी स्वीकार न हुआ। सिसली में मुसलमानों ने दो सौ वर्षों तक शासन किया और ड्रीपर के कथनानुसार यहां से यूरोप को मानसिक और बौद्धिक विकास की बहुत बड़ी शक्ति मिली मगर ईसाईयों की नज़रों में उनका शासन बराबर खटकता रहा। जब नार्मन ईसाईयों ने उन पर हमला किया तो बलरम शहर में पांच सौ मस्जिदें थीं, उनको शहीद करके गिरजाघर में परिवर्तित कर दिया। वहां इस्लामी विद्धानों और सूफियों की जितनी कब्रें थी सब मटियामेट कर दी गईं। चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में सिसली के मुसलमानों को बलात ईसाई बनाया गया। नौसेरा और बौसेरा के मुसलमानों की संख्या 80 हज़ार थी, उनको ज़बरदस्ती ईसाई बना लिया गया। प्रत्येक स्थान मुसलमानों से खाली करा लिया गया। उसका विवरण हिस्तोरीन हिस्ट्री ऑफ दि वर्ल्ड में पढ़ा जा सकता है।

बारहवीं और तेरहवीं सदी में यूरोप के ईसाईयों ने दो बरस तक मुसलमानों के विरुद्ध सलीबी जंग (क्रूसेडवार) इस लिए लड़ी कि उनके अस्तित्व को ज़माने से मिटा दें। "यूरोप का इतिहास"

के लेखक एच0 बी0 ग्रान्ट ने लिखा है कि ईसाइयों के निकट शत्रु की हत्या करना गॉड की उपासना के समकक्ष था। बैतुल मुकद्दस को ईसाईयों ने फतह किया तो एडवर्ड गबन लिखता है कि "सलीब (क्रास) के ध्वजवाहकों ने तीन दिन तक इतना कत्ले आम किया कि सत्तर हज़ार लाशों की वजह से महामारी फैल गई, जब उससे भी मन नही भरा तो यहूदियों को उपासना स्थलों में जला डाला"। उनके फौजी कमाण्डरों ने इस खूंरेज़ी की खुशी में अपने पोप को लिखा कि यदि आप ये मालूम करना चाहें कि हमने अपने दुश्मनों के साथ कैसा सुलूक किया तो इतना लिख देना काफी है कि जब हमारे सिपाही हज़रत सुलेमान अ0 की मस्जिद में दाखिल हुए तो उनके घोड़ों के घुटनों तक मुसलमानों का खून था।

स्पेन में मुसलमान आठ सौ साल तक रहे और मोसियोलिबान के कथनानुसार उस देश को उन्होंने यूरोप का सरताज बना दिया था। मगर यहां से ईसाईयों ने उनको दरबदर किया। उसका इतिहास मोसियोलिबान ने इस प्रकार लिखा है कि "1499 ई0 से वहां के मुसलमानों पर जुल्म के वह पहाड़ टूटने शुरु हुए जो एक सदी के अन्दर उनके पूर्ण निर्वासन पर समाप्त हुए। पहले तो वह बलात ईसाई बनाए गए फिर इस बहाने से कि वह ईसाई हैं वह उस पवित्र धार्मिक न्यायालय के सुपुर्द कर दिये गए जिसने उन्हें जहां तक सम्भव हुआ आग में जलाया फिर एक प्रस्ताव पेश किया गया कि सभी गैर ईसाई अरब औरतों और बच्चों के साथ कत्ल कर दिये जाएं। ये सम्भव न हो सका तो ये आम इश्तेहार दिया गया कि समस्त अरब एक साथ देश से निकल जाएं। पादरी बैंडा ने बड़ी खुशी के साथ बयान किया है कि इन अरबों में एक तिहाई रास्ते में मार दिये गए। एक ही निर्वासन में जिसमें एक लाख चालीस हज़ार अरबी अफ्रीका जा रहे थे, एक लाख मार डाले गए। कुछ महीने के अन्दर स्पेन से दस लाख से भी अधिक लोग निकल गए। सिद्दीपुर और अधिकतर इतिहासकार अनुमान लगाते हैं कि फ्रिडी की फतह से लेकर मुसलमानों के निष्कासन तक स्पेन से 32 लाख लोग निकल गए। ऐसे रक्तपात के बाद सेण्ट बर्थालोमियो की घटना धुंधली होकर रह जाती है। मोसियोलिबान ही का बयान है कि वहशी से वहशी और बेरहम से बेरहम शासकों ने कभी इस किस्म के दर्दनाक कत्ल–ए–आम का धब्बा अपने दाम पर नहीं लगाया। 1821 ई0 में युनान (ग्रीस) के क्षेत्र मोरया में तीन लाख और युनान के उत्तरी भाग में हज़ारों मुसलमान, मर्द, बच्चे और औरतें बड़ी नृशनता से मार डाले गए। विवरण हेतु मारमाड्यूक पिक्थाल की पुस्तक "कल्चर ऑफ इस्लाम" में पढा जा सकता है।

स्वयं भारत में ईसाई साम्राज्यवादियों की नृशनता कम भयावह नहीं है। सात समन्दर पार से आए अंग्रेज़ों ने यहां के नागरिकों को अपनी तोप व तलवार से मौत के घाट उतारा। 1757 ई0 में प्लासी के मैदान में नवयुवक सिराजुद्दौला को पराजित कर उसको विरासत से वंचित कर दिया। 1797 ई0 में टीपू सुल्तान को उनके किले में घुसकर शहीद किया। 1857 ई0 में जब हिन्दुस्तानियों ने अपने मुल्क के खातिर सरफरोशी से काम लिया तो उन्हीं अंग्रेज़ों ने अपनी तोप व

बन्दूक से सत्ताइस हज़ार मुसलमानों और भारतीयों को काल का ग्रास बना दिया। देहली को वधशाला (सलाटर हाउस) बना दिया गया। नब्बे साल के बूढ़े बहादुर शाह ज़फर को पदच्युत करके उनको निर्वासित किया। उनके शहज़ादों में से मिर्ज़ा खिज़्र सुल्तान और मिर्जा अबूबक्र को देहली दरवाजा के पास लाकर और उनके कपड़े उतार कर बड़ी निर्दयता से गोली मार दी। उनकी लाशों को सरे बाज़ार लटकाए रखा। उसके बाद बीस और शहज़ादों को फाँसी दी गई। क्या वह महारानी विक्टोरिया की मातृभूमि पर कब्ज़ा करना चाहते थे, उनको किस जुर्म की सज़ा दी गई?

इस बीसवीं सदी में जब लोकतंत्र, भाईचारा, समता और इन्सानी हमदर्दी का सबक पढ़ाया जाने लगा तो प्रथम विश्व युद्ध के बाद टर्किश एम्पायर को मिटाने के लिये जब ईसाईयों की सेना अनातूलिया में 15 मई 1919 ई0 को दाख़िल हुई तो यूरोप का प्रसिद्ध इतिहासकार टुवाइनबी लिखता है कि ये सेना अनातूलिया पर एक विपत्ति की तरह सहसा प्रकट हुई। समरना की गलियों में शहर के लोगों का कत्ल–ए–आम शुरु हो गया। मुहल्ले के मुहल्ले और गांव के गांव लूट लिये गए। उपजाऊ घाटियों में आग के शोले भड़कने लगे। खून की नदियां बहने लगीं, देश के आर्थिक ढाँचे को तबाह कर दिया गया। मकान, पुल और सुरंगें मटियामेट कर दी गईं। देश के नागरिक तलवार के घाट उतार दिये गए। जो बचे रहे उन्हें देश से निकाल दिया गया।

मुस्लिम शासकों के ज़माने में युद्ध हाते रहे हैं और रक्तपात अवश्य हुआ। मगर यूरोप के ईसाई शासकों की निर्दयता व नृशनता तथा दूसरों के वतन जाकर वहां के लोगों को गुलाम बनाने के सम्बन्ध में उनकी दुष्टता और बर्बरता का विस्तार पूर्वक इतिहास लिखा जाए तो फिर उनके मुक़ाबले में मुस्लिम शासक अपने दौर में धरती से असत्य को मिटाने वाले, मानवता को दासता की बेड़ी से छुडाने और एकेश्वरवाद की मदिरा पिलाने वाले ही नज़र आएंगे। वह जहां पहुंचे उसकी माटी को आपने माथे पर सजाया और उसके ज़र्रे–ज़र्रे को सीने से लगाया। सात समन्दर पार रहकर यहां के नागरिकों की खून–पसीने की कमाई से अपने बैंकों की तिजोरियों में बढ़ोतरी नही की।

फिर दोनों में फर्क ये रहा कि मुसलमानों को ये शिक्षा दी गई है कि अत्याचार करने वालों से युद्ध किया जाये, जो लोग धर्म के बारे में लड़ें उनसे जंग की जाए। जो लोग घरों से निकाल कर बाहर करें, उनसे और उनकी मदद करने वालों से भी लड़ाई की जाए। ईसाईयों को ये शिक्षा दी गई है कि जो तेरे दाएं गाल पर थप्पड़ मारे तो तू उसके सामने अपना दूसरा गाल भी फेर दे। जो तुझे एक मील अकारण ले जाए तू उसके साथ दो मील जा। जो तेरा कोट मांगे तू उसको अपना कुर्ता भी दे दे। क्या ईसाई शासकों ने इस पर अमल किया? अमल करने की बजाए वह जहां पहुंचे उसको मरघट और शमशान बना दिया। वह अपने इतिहास लेखन के जादू से अपने समस्त अपराधों को विशेषतः मुसलमान के सर धर का बरी होने की कुचेष्ठा करते हैं। मुसलामनों को इन धूर्तता पूर्ण लेखन के झाँसे में न आते हुए ये सिद्ध करके दिखाना है कि–

"मेरे इल्म व मुहब्बत
की नहीं है इन्तेहा कोई,
नही है मुझसे बढ़कर
साजे फितरत में नवा कोई"

❖❖❖

# अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

**मस्जिद की नहीं क़ानून की पैरवी है–** अमेरिका के ट्रिवन टावर पर हमले के गवाह रहे ग्राउंड जीरो के पास मस्जिद बनाने का समर्थन कर रहे राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा ने साफ किया है कि वह इबादतगाह बनाने के प्रस्ताव की नहीं बल्कि अमेरिकी संविधान में धार्मिक स्वतंत्रता की पैरवी कर रहे हैं।

ओबामा ने कहा, अगर उस जगह चर्च बन सकता है, यहूदी पूजागृह या मंदिर बन सकता है तो इस्लाम के मानने वालों के प्रति अलग बर्ताव कैसे किया जा सकता है। देश के राष्ट्रपति होने के नाते अमेरिकी संविधान का पालन करना उनका फर्ज है।

उधर राष्ट्रपति ने अपने धर्म और जन्म स्थान पर उठ रहे विवादों से तंग आकर यह भी कहा कि वह हर समय अपना जन्म और धर्म प्रमाण पत्र माथे पर चिपका कर नहीं रख सकते।

**जे0पी0सी0 का गठन–** जेपीसी के गठन को लेकर संसद के शीतकालीन सत्र में भले ही कोई काम नहीं हो पाया हो पर सत्र ने एक इतिहास जरूर रच दिया है। नौ नवंबर को शुरू हुए शीतकालीन सत्र में पूरे सत्र के दौरान लोकसभा में सिर्फ एक दिन और राज्यसभा में कुल 2 घंटे 44 मिनट काम हुआ है। संसद की कार्यवाही पर खर्च होने वाले आम आदमी की कमाई के करीब डेढ़ अरब रूपये हंगामे के भेंट चढ़ गए।

**1950 में स्कूटरों से ज़्यादा थीं कारें–** 1950 में भारत में वाहनों की कुल संख्या 3 लाख थी। जिसमें 27 हजार दो पहिया वाहन, 1 लाख 59 हजार कार, जीप और टैक्सी, 82 हज़ार ट्रक और 34 हजार बसें थीं। इस दौरान दुपहिया वाहनों में सबसे बड़ा नाम बजाज का था। बजाज कंपनी तब सिर्फ दोपहिया और तिपहिया वाहन ही बनाती थी।

**2011 में बाइक और स्कूटर हैं सब पर भारी–** देश की सुधरती आर्थिक स्थिति के चलते इस आंकड़े में भी इजाफा हुआ। 2011 तक भारत में कुल वाहनों का आंकड़ा लगभग 22 करोड़ है, जिसमें से दो पहिया वाहनों की संख्या लगभग 17 करोड़ 60 लाख और 4 करोड़ 40 लाख चार पहिया वाहन हैं जिसमें कार, टैक्सी, बसें और ट्रक शामिल हैं।

**70 अरब डॉलर के मालिक हैं मुबारक–** राष्ट्रपति हुस्नी मुबारक के परिवार के पास अनुमानतः 40 से 70 अरब डॉलर की सम्पत्ति हो सकती है। मुबारक के परिवार द्वारा यह सम्पत्ति सैन्य ठेकों से उस समय अर्जित की गई जब वह वायुसेना के अधिकारी थे।

**'इस्लामिक जागरण' की शुरुआत –** ईरान के शीर्ष नेता आयतुल्ला अल खुमैनी ने कहा कि अरब देशों में विद्रोह की जो लहर उठी है वह 'इस्लामिक जागरण' की शुरुआत है जिसकी परिकल्पना 1979 ई0 में ईरानी क्रांति के दौरान की गई थी। ईरान के शीर्ष नेताओं ने मिस्र में विद्रोह का प्रोत्साहन किया है और अपने प्रमुख शत्रु अमेरिका को इस विद्रोह में दखल न देने की चेतावनी दी है। ❑❑